Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KAVYGANGA G.K.V.

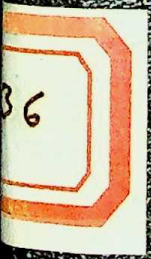

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या .... आगत संख्या.....

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैन धर्मदत्त
स्मृति संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि इन्द्र जेतली कृत

04633/1

काव्य गंगा

की

दो धारायें

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

वैद्य धर्मदत्त
स्मृति संग्रह

१ सूक्ति धारा

२ हृदय हर धारा

प्रथम संस्करण

१००० प्रति

सन्
१९७३

मूल्य
३-०० रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक (मिलने का पता)

रोहिताश्व प्रकाशन

१३२७-२२ बी, चण्डीगढ़

D
१३६

सर्वाधिकार सुरक्षित है ।

मुद्रक :—

रामकृष्ण गुप्ता, एम. ए. बी-एड.

प्रोप्राइटर

अग्रवाल प्रिंटिंग प्रेस, (फोन : ३७) ज्वालापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक का वक्तव्य

आज हमें पाठकों के सामने ये दो धारायें प्रस्तुत करते हुए बहुत हर्ष होता है। यों तो हमारी इच्छा थी कि इन्द्र जी की ७०० सूक्तियों का संग्रह दिया जाय। पर ९२ सूक्तियां हम इस में दे रहे हैं। शेष सूक्तियां मनोहर धारा में छप रहीं हैं। इस प्रकार शीघ्र ही ५०० सूक्तियाँ प्रकाशित हो जायेंगी। शेष सूक्तियाँ भविष्य में प्रकाशित होने वाली धाराओं में छपवा दी जायेंगी। अनेकों सूक्तियां मर्तृहरि और चाणक्य नीति से हैं। कुछ पाश्चात्य साहित्य से भी हैं। कवि जी ने नयी सूक्तियाँ अपने आप बनाई हुई भी प्रस्तुत की हैं। मर्तृहरि आदि की सूक्तियों का हिन्दी रूपान्तर कवीन्द्र जी ने बड़ी सरस भाषा में किया है। भ्रमर और कमल वाली सूक्ति मे 'रात्रिर्गभिष्यति' श्लोक का भाव तो सारा आ ही जाता है पर इसके अलावा भी कुछ रचना है जो कवि जी की अपनी सूझ है। और इस तरह यह सूक्ति काव्यमय हो गई है। ऐसी सूक्तियों को या सूक्ति निबन्धनों को केवल मात्र की रूपान्तरों श्रेणी में नहीं रकवा जा सकता। हिन्दी में सूक्ति साहित्य की बहुत ही कमी है जिसे कवि जी ने थोड़ा बहुत तो पूरा करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

हृदय हर धारा एक दम सीधे हृदय से बात करती है। धारा के अन्त में कुछ कवितायें कवि जी के साधारण स्तर से कुछ नीचे उतर जाती हैं। हमारे चुनने में तथा उनको परिष्कृत करने में कुछ कमी रह गई है पर फिर भी हृदय हारी धारा अपनी अनूठी ही उपयोगिता या उपादेयता रखती हैं। कवि जी साधारण बोल चाल की भाषा में की हुई कविता को काव्य की सर्वोत्तम रचनाओं में गिनते हैं। वे रहस्य वाद, छायावाद आदि की ओर नहीं भागते। वे तो कहते हैं कि मनुष्य जाति का कल्याण इसी में है कि मनुष्य अपने आप को समझे। इसके लिए मानवी हृदय का ज्ञान सर्वोच्च है। इसलिए भाषा किसी भी हिन्दी काव्य की वह होनी चाहिए जो चिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्थायी हो, जो देश और जाति को उन्नति की ओर ले जाने वाली हो। ये नहीं होना चाहिए कि पाठक काव्यानन्द को तो किसी और भाषा शैली में लें और सांसारिक कार्य के लिए किसी और भाषा शैली बरतें। ऐसी अवस्था तो सर्वथा ही एक तरह की कृत्रिमता है। अधिक तो समालोचक ही लिखेंगे मैं तो प्रकाशक के नाते ते दो तीन शब्द लिख रहा हूं।

हिन्दी की पुस्तकों में यत्र-तत्र कुछ यान्त्रिक स्खलन या मानवीय भूलें होती जाती हैं। सो उसके लिये क्षमा का प्रार्थी हूं।

श्री अग्रवाल प्रेस के मैनेजर साहब को मेरा हार्दिक धन्यवाद है। उन्होंने बड़ी सहृदयता, सौजन्यता, उत्साह और प्रसन्नता से जिस काय को सम्पन्न कर दिया है मैं उसके लिए उनका बहुत बहुत अनुगृहीत हूँ।

चण्डीगढ़
६-१-७४

रोहितास
हिन्दी प्रभाकर

कवि का परिचय

सन् उन्नीस्सौ आठ में, जेहलम नद के तीर,
प्रगटे ब्राह्मण वंश में, जेतल जी कवि वीर।
अभी जौलाई मास के दिन बाकी थे सात,
अर्द्ध रात्रि के बाद में, सुन्दर समय प्रभात।
ईश्वर देवी गोद में मानो सुख की रास,
मोद बढ़ाने आ गये, नन्दन मैय्या दास।
भेरा नामक नगर में, देवी का जँह द्वार,
इन्द्र सेन शुभ नाम की बही प्रेम की धार।
समय जवानी जब भया परिणय करके ल्याय।
शरच्चन्द्र की चांदनी शीतल सुखद सुभाव,
पत्नी शारद सुन्दरी, भव सागर की नाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Presented by Dr. Dharam Datta ji
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय सूची

सूक्ति धारा

18.4.74

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
१	क्यों न उड़ते हो भ्रमर	१
२	हो नहीं सकता कभी भी मूर्खजन का चित् प्रसन्न	१
३	भाग्यवान् पशु	२
४	मूर्ख की औषध नहीं	२
५	पतन होंगे बार बार	३
६	अल्पज्ञान का उन्माद	३
७	मौन गुण प्रशंसा	३
८	खल जन सज्जनों के मार्ग पर नहीं ले जाये जा सकते	४
९	सहसा काम मत करो	४
१०	अज्ञः सुखमाराध्यः	५
११	नारियों में क्यों फंसा	५
१२	नर तथा पशु में भेद	५
१३	विद्या की महिमा	६
१४	ज्ञान शशि की कान्तियां	६
१५	केतकी	६
१६	अस्मतें लुट गईं	६
१७	जो दूसरों की पीड़ा नहिं अनुभव करते	७
१८	धन महिमा	७
१९	घूमना कब अच्छा है ?	७
२०	विधि का लेख कौन मेट सकता है	८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१	विधि को उपालम्भ	८
२२	दैव गति	८
२३	न्याय पथ का पथिक	९
२४	साजन का प्रश्न सजनि से	९
२५	धीर पुरुष	१०
२६	मनस्वी पुरुष	१०
२७	सोने का हिरन संभव नहीं	१०
२८	हर एक से मत माँग	११
२९	उत्तम स्वभाव नष्ट नहीं होता	११
३०	चमकने वाली सब वस्तुवें स्वर्ण नहीं	११
३१	छानियाँ	११
३२	विद्यार्थियो सुख छोड़ दो	११
३३	कौन किस का रिपु है ?	१२
३४	वेणु चन्दन नहिं बनता	१२
३५	रो रहे तुम किस लिये ?	१२
३६	पढ़ कर क्या करोगे ?	१२
३७	रंग लेकर दूसरा जो बर्ग अपना छोड़ता	१२
३८	मणि छोड़ रत्ती क्यों खोजती है ?	१४
३९	स्थूलता में कुछ नहीं	१४
४०	दुर्जन साधु नहीं बनते	१४
४१	विद्या के लिए अष्ट त्याग	१४
४२	बुद्धिर्यस्य बलं तस्य	१५
४३	महा-पुरुषों के गुण	१५
४४	विद्या सुख की कुञ्जी है	१६
४५	इन गुणों से रहित मनुष्य पशु समान है	१६
४६	साहित्य संगीत एवं कला रहित	१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४७	वृद्ध जन की सेवा से चार बढ़ते हैं	१६
४८	सज्जनों की सम्पत्ति दूसरों के हित के लिये होती है	१६
४९	चाहना वे मेल है	१७
५०	कौन समझे शम्भु को	१७
५१	दीन कौन होता है	१७
५२	दुर्जन नहीं बदलते	१७
५३	चेतना	१७
५४	गरीबी से बन्धुओं में रहना	१८
५५	वेद वृक्षों की रक्षा करो	१८
५६	ईश का तू गान कर	१८
५७	कैसे देश में वास करे	१९
५८	परखें	१९
५९	बन्धु के गुण	१९
६०	निश्चित छोड़ अनिश्चित के पीछे मत जाओ	२०
६१	कर न तू विश्वास रे	२०
६२	मनुष्य को उपदेश	२०
६३	अनपढ़ों के शत्रु	२१
६४	लालना ही लालना	२१
६५	स्वजन से अवमान का	२२
६६	विष–घट मित्र	२२
६७	रोज़ प्यारे तुम पढ़ो	२२
६८	कष्ट	२२
६९	अच्छी चीज हर जगह नहीं होती	२३
७०	कौन हो ? अधम, मध्यम या उत्तम (मूर्ख बुद्धिमान में अन्तर, शीर्षक गलत है।)	२३
७१	सत्संगति	२३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७२	वाणी	२३
७३	दीन याचन किस लिये	२३
७४	परिवर्तन मय संसार में	२४
७५	अर्थोक्ष्मा चली गई–	२४
७६	वित्त की तीन गतियां	२४
७७	दुष्टजन	२४
७८	और धन हैं किस लिये	२५
७९	लोभ, पिशुनता और अपयश क्या हैं ?	२५
८०	मैत्रियों की तुलना	२५
८१	संगति का प्रभाव	२५
८२	एक हो	२६
८३	हाथ कान और काया किसलिये ?	२६
८४	मित्र	२७
८५	अपने आप	२७
८६	मनुष्यों के प्रकार	२७
८७	सन्त जन	२७
८८	मित्र, पुत्र, स्त्री कैसे हों ?	२७
८९	काम कौन पूरा करते हैं?	२८
९०	कौवे और कोयल में फ़रक	२८
९१	कौन देखे जीतता	२८
९२	ग्राहिनी तिय छवि	२९

हृदय हर धारा

१	मित्र मेरे मत रुको	२९
२	चतुर्मुखी प्रेम	२९
	१ पिता के प्रति	२९
	२ माता के प्रति	३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	३ भाई के प्रति	३०
	४ स्वसा के प्रति	३०
३	द्वार मेरे	
४	हर किसी से बाँटते हैं	३१
५	ईश्वर की आवाज़ कहां है ?	३२
६	शब्द छोटे	३२
७	उमर कितनी है तुम्हारी ?	३३
८	हर्ष वर्षा (पड़ोसिन के प्रति)	३३
९	पड़ोसिन के उद्‌गार	३४
१०	कर्मठी स्वच्छन्द है	३५
११	जीवन की प्रात में	३६
१२	जवानी की रात में	३७
१३	अनजाने बोला शब्द	३८
१४	माली को सम्बोधन	३९
१५	तब और अब	४०
१६	मित्रता एवं मित्र	४१
१७	प्रेम का स्वरूप	४४
१८	क्रूर सुन्दरी	४५
१९	ज़िन्दगी	४८
२०	आह्वान गीत	५१
२१	किस लिए हूं जी रहा	५२
२२	अलि को सलाह	५२
२३	संवेदना	५३
२४	खेल है संसार नाटक	५३
२५	हारें भूलें गलतियां और विघ्न	५४
२६	जी रहा हूं किस लिये	५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२७	सुख सुधा पीता रहूं	५७
२८	मित्रता	५८
२९	धन्य जीवन	५९
३०	नव वधू का स्वागत	६०
३१	नव वर्ष का स्वागत	६१
३२	मेरा घर	६२
३३	बन महोत्सब	६३

———

जनता को जानकर खुशी होगी कि जेतल जी की काव्य गंगा की रस धारा छप कर प्रकाशित हो चुकी है और रोहिताश्व प्रकाशन १३२७-२२ बी चण्डीगढ़ से प्राप्त हो सकती है। इस धारा में चार लहरें हैं। सबसे प्रथम रघु का दक्षिणा दान हैं। कौत्स ऋषि अपने गुरु वरतन्तु जी को दक्षिणा देना चाहते हैं। दक्षिणार्थ धन याचना के लिये वे चक्रवर्ती विश्व-जीत् राजा रघु जी के पास पहुंचते हैं। पर रघु महाराज विश्वजित् यज्ञ करने के उपरान्त अपनी सब सम्पत्ति दान कर चुके हैं। ऋषि जी को खाली हाथ भी लौटा नहीं सकते तो इस विकट स्थिति में रघु जी क्या करते हैं इस लहर में पढ़ें।

दूसरी लहर 'राहिन की कहानी' की है। एक विरहिन जिसने मान करके अपने प्रेमी को अपना हृदय नहीं दिखाया था। दर दर, शहरों, जंगलों और पहाड़ों की राहों पर भटकती फिरती है। वस्तुतः ये अपने प्रेमी से हार्दिक प्रेम करती थी पर मानवश उसे बाहर से ठुकराती रहती थी। प्रेमी ने समझा कि वह उसे नहीं चाहती। इसलिये वह निराश होकर कहीं चला गया। अब यह उसके विरह में पागल हुई २ उसे जंगलों में खोज रही है। वहाँ उसे एक दरवेश मिलता है। दरवेश उसे क्या सलाह देता है और आगे राहिन का क्या होता है इस लहर में पढ़िये।

(शेष अन्तिम कवर पृष्ठ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों न उड़ते हो भ्रमर ?

मधुर मधु से मस्त होकर,
मस्तियों में भूल कर।
समय का सब ज्ञान खो कर,
आँख करते बन्द क्यों ?
कमल अन्दर कैद होंगे,
क्यों न उड़ते हो भ्रमर,
अंशुमाली छिप रहे हैं।
रात-रानी खिल गई।
कमल की उन पाँखुरी ने,
बन्द होना शुरु किया।
देखते ही देखते लो,
कैद षट्पद कर दिया।
मस्तियाँ तब, उड़ गईं सब,
भ्रमरिका की याद में,
सोच में आबोर भौंरा,
गुनगुना कहने लगा।
रात निश्चय जायगी रे,
प्रात नव आजायगी,
सूर्य अरूणिम उदय होंगे।
कमलिनी खिल जायगी।
कैद से उन्मुक्त होकर,

आज की ये दासतां,
इन्द्र कविजी मत लिखो तुम,
मैं कहूँगा जा स्वयम्।
ये अभागे शब्द थे वे,
जो न पूरे हो सके।
एक हथिनी आ गई हा,
हाथ को उसने बढ़ा,
तोड़ डाला फूल कुवलय
जो न फिर था खिल सका।
हाय! फिर नहिं खिल सका

हो नहीं सकता कभी भी मूर्ख जन का चित् प्रसन्न

खोल करके मकर मुख को,
डाल करके हाथ को,
दाढ़ से मणि को उखाड़े,
कोई जग का वीर नर।
तैर डाले लहर वाला,
उदधि उद्धत चण्ड भी।
क्रुद्ध नागें सिर उठाले,
फूल मालों की तरह।
कार्य संभव कर दिखाये,
जो असंभव हर तरह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर नहीं सकता कभी पर,
कोई कितना भी करे,
हठ पर अड़े, अड़ियल बड़े,
मूर्ख जन का चित् प्रसन्न ।।
तेल सरसों-सा निकालो,
पीस करके रेत को ।
देश मरुओं में फिरो जब,
पानियों को खोजते,
मृगमरीचा से कहीं पर,
प्यास अपनी लो बुझा ।
जंगलों के पर्यटन में,
प्राप्त करलो शशक शृंग ।
कार्य संभव कर दिखावो
जो असंभव हर तरह ।
हो नहीं सकता कभी पर,
कोई कितना भी करे ।
हठ पर अड़े, अड़ियल बड़े,
मूर्ख जन का चित् प्रसन्न ।

भाग्यवान् पशु

गीत रस जो ले न सकते,
काव्य रस जिन में नहीं,
मूर्ति-चित्रादि कला को ।
देख रहते, ठूंठ जो,
नर नहीं वे पशु निरे हैं,
फ़रक इतना सिरफ़ है ।
सींग उनके नहिं बने हैं,
पूँछ उनके नहिं लगीं ।
भाग्य उनका है बड़ा जो
घास चरनी नहिं पड़ी ।
यह बड़ा सौभाग्य है ।

मूर्ख की औषध नहीं

आग को हम पानियों से,
शान्त कर सकते प्रिये,
धूप को हम छतरियों से,
दूर कर सकते प्रिये ।
गर्दभों को लाठियों से,
ठीक कर सकते प्रिये ।
व्याधियों को औषधों से,
स्वस्थ कर सकते प्रिये ।
साँप घेरे डाल करके,
मन्त्र-यन्त्रित कर सकें ।
हाथियों को अंकुशों से,
मनुज काबू कर सकें ।
पर नहीं औषध कहीं पर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्ख पर जो चल सकें।
शास्त्र सारे खोल देखो,
फोल कर सारे सफ़े।

पतन होगें बार बार

स्वर्ग से थी गंग उतरी,
शम्भु जी के शीश पर।
शम्भू जी के शीश से फिर,
तुङ्ग हिमगिरि शृंग पर।
तुङ्ग हिमगिरि शृंग से फिर,
उतर गई मैदान में।
तीर्थ जिस पर हैं अनेकों,
देश भारत वर्ष में।
पार करके देश सारा,
सिन्धु में है जा मिली।
स्वर्ग से ले सिन्धु तक का,
पतन होता देख कर,
गंग-देवी का अहो तब,
'इन्द्र' कवि कहने लगे।
पतन होगा एक भी तो,
और होंगे बारबार,
स्वर्ग से गिरता रुकेगा,
सिन्धु में ही डूब कर।

अल्पज्ञान का उन्माद

ज्ञान मुझको जब ज़रा था,
हाथियों सा मस्त था।
मस्त होकर घूमता था,
गर्व में उस ज्ञान के।
तब समझता था स्वयं को,
ज्ञानवानों में महान्।
ज्ञान जितना पास मेरे,
है न उतना और के।
ज्ञानियों के संग से जब,
ज्ञान कुछ पाने लगा,
ज्ञान का उन्माद सब काफ़ूर,
तब होने लगा।
मूर्ख हूं मैं हाय कितना
समझ में आने लगा।

मौन गुण प्रशंसा

मौन गुण ऐसा बना कि,
अज्ञता छिपती स्वयम्।
ज्ञान की चर्चा चली तो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पता किसको कि उनके
पास कितना ज्ञान है ?
मौन धारे जो सभा में,
वेदि पर आसीन हैं ।
सर्वविद् की इस सभा में,
मौन के बल पर बने
अल्प विद् भी सर्व विद् हैं ।
मौन टूटा गर कहीं तो,
भेद सब खुल जायगा ।
तोड़ना नहिं मौन को मुनि
अल्पविद होना नहीं ।
है विधाता, धन्य हो तुम,
मौन चूँकि रच दिया ।

खलजन सज्जनों के मार्ग पर नहीं ले जाये जा सकते

तन्तुओं से बाँध लो तुम
कमल कोमल नाल के,
हाथियों को जंगली जो,
अतुल बल के हैं धनी ।
वज्रमणियाँ छेद लो तुम,
सिरस-कोरक कील से.
मधुर मधु की बूंद लेकर,
सागरों के खार पन,
तुम मिटालो घोल कर सब,
सकल जग में एक दम ।
सूक्तियाँ अमृत भरी भी ।
यदि सुनालो रात दिन,
खल जनों को ले चलोगे,
सज्जनों के मार्ग पर,
है नहीं संभव कभी भी ।
है नहीं संभव कभी ।
भर्तृ हरि जी कह गए हैं,
भर्तृ हरि जी कह गए ।

सहसा काम मत करो

काम कोई भी कभी सह-
सा न करना चाहिए ।
सोचना व विचारना तो,
हर बशर का फर्ज़ है ।
सोच के जो काम करते,
लालची गुण की बड़ी,
सम्पदा उनको हैं वरतीं,
आप आकर के स्वयम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञः सुखमाराध्यः

सरल है आराधना वह,
जानना जो कुछ नहीं।
सरलतर उसका बहुत जो,
वस्तुतः है जानता।
कठिन पर अत्यन्त उसका,
(यत्न कोई क्या करे?)
ज्ञानलव अभिमान से जो,
गर्व में डूबा फिरे।
नारियों में क्यों फँसा?
स्वर्ग द्वारों की कपाटें,
पाटने में जो पटु,
धर्म, वह अर्जित किया ना,
नारियों में जा फँसे!
नारियों में क्यों फँसा तू?
नारियों में क्यों फँसा?
त्याग दे इन नारियों को,
नालियों में क्यों धँसा।
त्याग दे इन सारियों को,
सारियाँ पहिनी हैं जो।
चित्त-वृत्ति रोध कर तू,
आत्म का कुछ बोध कर।
कान रस का त्याग कर तू,
राग से न राग कर।
जीभ रस से भाग जा तू,
भोग से वैराग कर।
ईश से अब योग कर तू,
विष, विषय हैं, रोग-कर।

नर तथा पशु में भेद

यत्न कर आहार पाना,
और करनी मैथुनें।
जन्म देकर वत्स अपने,
पाल लेना यत्न से।
नींद ले आराम करना,
त्यागना मल का तथा,
मनुज पशु में कृत्य सारे,
एक से हैं, एक से।
भेद है तो ज्ञान का है,
ज्ञान का बस ज्ञान का।
ज्ञान रखते नर सदा हैं,
जो कि पशु रखते नहिं।
नर जगत में यदि कहीं पर,

(आराधना अर्थात् प्रसन्न करना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान से हैं शून्य तो,
'इन्द्र' कहता पशु निरे हैं,
वेश में नर तुल्य से।

विद्या की महिमा

चोर कैसे ये चुराए ?
भूप कैसे छीन ले ?
शक्ति किस की बाँट लेवे,
भार जिसका है नहीं,
खर्च कर देखो, बढ़ेगा।
इल्म धन सबसे बड़ा।

——

ज्ञान शशि की कान्तियाँ

कान्तियाँ हैं ज्ञान शशि की,
बादलों में छिप गईं।
घोर घन काली घटा जब,
अज्ञता की छा गईं।
अज्ञता की छा गई जब,
अन्धकारों से भरीं।
अन्धकारों से घिरी सब,
छिप गईं शशि कान्तियाँ।

केतकी

केतकी को देख कर के,
'इन्द्र' कवि हैरान हैं।
कीचड़ों में वास इसका,
साँप इस पर लोटते।
फल न इस पर कोई लगता।
कण्टकों से ये घिरी।
कष्ट से है प्राप्त होती,
वक्र इस के अंग हैं।
दोष इसमें बहुत सारे,
पर न गिनते हम उन्हें।
चूंकि गुण इक गन्ध वाला,
मेट देता दोष सब।

अस्मतें लुट गईं

"भूमि को क्यों देखती हो ?
गिर गया क्या अंगने !"
"मोतियें कुछ गिर गई हैं,
हार से तरुनाई की।
धूल में गिर मिल गईं" कह;
शरम से पानी हुई।
"आँख ऊपर क्या करूँगी,
मोतियें गुम हो गईं।
भाग्य मेरा है ही ऐसा,
अस्मतें हैं लुट गईं।"

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो दूसरों की पीड़ा नहिं अनुभव करते

लो सुनाता हूँ सभी को,
भीरु को क्या वीर को।
आठ, अनुभव जो न करते,
दूसरों की पीर को।
भूप जो हैं राज्य करते,
सख़्त जिनकी बोलियाँ।
मङ्गते जो माँगते हैं,
डाल गल में झोलियाँ।
चोर, जो हैं धन चुराते,
रोज़ करते, चोरियाँ।
देव यम, जो हैं सुलाते,
मरण की दे लोरियाँ।
बाल, जो अनजान, समझें,
रुचिर को ना सुषिर को,
कण्टकें, जो प्राणियों के,
हैं बहाती रुधिर को।
दहन, जो हैं दहन करतीं।
होम में हविभक्षिणी।
लाट जिनकी रक्तवर्णी,
होम की आरक्षिणी।
कामिनी, जो बेचती हैं,
वासनार्थ शरीर को.
आठ ये अनुभव न करते,
दूसरों की पीर को।

धन-महिमा

धन तुम्हारे पास है तो,
मित्र भी होंगे बहुत।
धन तुम्हारे पास है तो,
बन्धु भी होंगे बहुत।
धन तुम्हारे पास है तो,
जाति के सन्मान हो।
धन तुम्हारे पास है तो,
देश के अभिमान हो।

घूमना अच्छा है कब ?

घूमता राजा प्रजा हित,
कुल प्रजा नृप पूजती।
घूमता सन्यास ले जब,
पूज्य बनता तब यति।
घूमने से भूप, यति हैं,
प्राप्त करते जन रति।
घूमना पर ये स्त्रियों में,
एक दूषण है बड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूमने से नारियों की,
उतर जाती लाज-पति ।
घूमने से सत, न रहती,
घूमना लाञ्छन बड़ा ।

विधि का लेख कौन मिटा सकता है ?

यदि करीरों पर, कहीं पर,
पत्र निकलें हों नहीं ।
तो न कहना, सजनि यह कि,
दोष है ऋतु राज का ।
यदि चमकते, सूर्य से भी,
नाँ उलूकों को दिखे,
तो न कहना, सजनि, यह कि,
सूर्य का यह दोष है ।
यदि बरसते, मेघ होंवे.
पर तरसती, चातकें
तो न कहना, सजनि, यह कि,
मेघ का यह दोष है ।
जो लिखा था, इन ललाटों
पर कभी विधि ने स्वयम् ।
मेट सकता, कौन उसको ?
ये बताओ तो हमें ।

विधि को उपालम्भ

सब गुणों की कान सुन्दर
जगत का जो रत्न है ।
पुरुष पैदा कर विधे क्यों,
फिर उसे चूरा किया ।
विधि तुम्हारी मूर्खता का,
क्या ठिकाना है, अहो !
तोड़ना यदि था उसे तो,
क्यों बनाया था कहो ?

दैवगति

रात की यह बात सजनी,
साँप भीषण शंख चूड़ ।
भूख से पीड़ित हुआ वह,
टोकरी में बन्द था ।
ग्रास जिसको थी न बिल्कुल,
छूटने की तनिक भी ।
विवर करती एक चूहि,
टोकरी में जा घुसी ।
मौज से तब साँप उसको ।
खा गया औ, तृप्त हो,
बिल बनाई मूषिका की,
से निकल बाहर गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँप लो फुन्कार कर कर,
जंगलों में घूमता।
मूषिका वह खुद मरी आ,
दैव की हाय! करनियाँ!

न्याय्य पथ का पथिक

न्याय्य मैंने जो उठाये,
कदम हैं नहिं मोड़ने।
मौत लायें या न ला कर,
के जिलायें युग युगों।
न्याय्य मैंने जो उठाये,
कदम हैं नहिं मोड़ने।
लक्ष्मियाँ आयें यँ जायें,
ये उन्हों की मर्जियाँ।
न्याय्य मैंने जो उठाये,
कदम हैं नहिं मोड़ने।
तख्त ताउस पर चढ़ूँ, या
तख्त फाँसी से गिरूँ।
न्याय्य मैंने जो उठाये,
कदम हैं नहिं मोड़ने।
नीतियों के, विज्ञ आके,
स्तुति करें या निन्दना
न्याय्य मैंने जो बढ़ाये,
कदम हैं नहिं मोड़ने।
न्याय्य पथ पर ही चलूँगा।
धीर जन कर अनु करण।
न्याय्य जो होगा करूँगा।
ये हि मेरा एक प्रण।

साजन का प्रश्न सजनि से

"कौन है किसको सजाता?
प्रश्न मेरा सजनि ये।"
"मैं बताती हूँ तुम्हें लो,
ऐ सुनो मेरे सुजन।"
साज बनती है सुजनता,
मनुज के ऐश्वर्य की।
वाणि-संयम है विभूषण।
शौर्य वाले पुरुष का।
ज्ञानियों की शान्ति भूषण,
औ' विनय भी ज्ञान की।
पात्र जो हैं दान लायक,
वित्त से सुन्दर सजें।
तप तपें यदि नित्य नर तो,
क्रोध तन मन क्यों रहें।
देह सजता क्रोध की तब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्यता से हे सुजन।
धर्म सजता है वही जो,
निष्कपट निर्व्याज है।
छद्म दूषण, धर्म का है;
सरलता इक साज है।
सब गुणों की सर्व भूषण,
शीलता सब से बड़ी।
शीलता की मूर्ति सुन्दर,
सजनी तेरी हूँ खड़ी।

धीर पुरुष

देवताओं ने किया क्या,
सुन सुजन इस सूक्ति को।
मूल्य वाले रत्न पाकर,
भी किया ना तोष था।
विष भयंकर आ गया तो
भी भगे ना भीत हो।
मथन करते ही गये थे,
सागरों को बिन थके।
अन्त में जब अमृतों को,
पा लिया तो तब हटे।
धीर जन रुकते तभी जब
लक्ष्य लें निज प्राप्त कर।

मनस्वी पुरुष

सेज हैं पर्यङ्क को तो,
भूमियों पर शयन भी।
चावलों के भोज खाते,
तो कभी हैं शाक भी।
वस्त्र पहिनें राज सी यदि,
तो हैं फिरते नग्न भी।
दुःख में नहिं दुःख मानें,
सौख्य में नहिं हर्ष भी।
जो मनस्वी दत्त चित् हों,
कार्य साधन में लगे।
वे न गिनते दुःख में दुख,
सुख न उनके ध्यान में।

सोना हिरन संभव नहीं

हे प्रिये सम्भव न है,
सोना-हिरन होना कभी।
राम फिर भी लालचों में,
हाय कैसे फंस गए?
समय आता विपद का जब,
मलिन होती बुद्धियाँ।
सोच मन में हो न सकती,
सोचता ही मन नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़लत होती शुद्धियाँ भी,
मलिन हों जब बुद्धियाँ।

हर एक से मत माँग

मित्र चातक एक छिन तुम,
ध्यान धर कर के सुनो।
एक जैसे सब न बादल,
जो गगन में दीखते।
सींचते कुछ भूमि हैं तो,
व्यर्थ में कुछ गर्जते।
पानियों को माँग मत, हर
एक से तू दीन बन!

उत्तम स्वभाव नष्ट नहीं होता

रगड़ दो कितना भी चन्दन,
चारु गन्ध न छोड़ता।
छील दो फिर फिर भी गन्ना,
मधुर देता स्वाद है।
दग्ध कर दो चाहे कुन्दन,
को चमकता और है,
नाशने से नष्ट होता
है नहीं उत्तम सुभाव।

——

चमकने वाले सब स्वर्ण नहीं!

क्या सुना तुमने नहीं है?
यदि नहीं तो अब सुनो
स्वर्ण-से जो चमकते हैं
सब नहीं स्वर्ण वे।
रींगती हैं कीट उनमें,
गोर (कबर) जो सोना-मढ़ी।

छानियाँ

रेत निर्मल छानियाँ हैं,
छान कर जल पान कर,
नजर की ये छानियाँ है,
छान कर के पैर रख,
अन्तरात्मा छानियों से,
छान कर के कर्म कर,
शास्त्र-छानी छान करके,
बोलने को सीख ले।

विद्यार्थियों सुख छोड़ दो

छोड़ दो विद्यार्थियो सुख,
इल्म लेना है अगर,
छोड़ दो विद्यापठन को,
सौख्य की यदि कामना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख न उनके वा ते है,
इल्म जो हैं चाहते।
इल्म उनको नहिं मिलेगा,
सौख्य जो हैं चाहते।

कौन किसका रिपु है ?

लुब्ध का रिपु है भिखारी,
मूर्ख का रिपु ज्ञानवान्।
जार का पति शत्रु अपना,
चोर का रिपु चन्द्रमा।

वेणु चन्दन नहीं बनता

वेणु क्या चन्दन बनेगा
मलय गिरि के वास से ?
हृदय-अन्तर खोखला तो
साधु संगति क्या रे ?

रो रहे तुम क्यों कहो ?

रात में बसते अनेकों,
विहग हैं तरु एक पर,
प्रात होते ही सभी वे,
छोड़ जाते वृक्ष को,
एक तेरा उड़ गया तो,
रो रहे तुम क्यों कहो ?
विज्ञ हैं न शोक करते,
इसलिए चुप तुम रहो।

पढ़ कर क्या करोगे ?

शास्त्र पढ़ कर क्या करोगे ?
समझ यदि रखते नहीं।
आयने से क्या करोगे ?
नयन यदि लखते नहीं॥
रंग ले कर दूसरा जो,
वर्ग अपना छोड़ता।
नष्ट होता उस तरह से,
जिस तरह गीदड़ हुआ।
एक दिन की बात है कि,
ढूंढता फिरता हुआ
एक गीदड़ आ गया लो,
गाँव के कुछ पास तक
देख उसको कुक्करों ने
भौंकना शुरु कर दिया।
जान उसकी खौफ से लो
खुश्क हो गई एकदम।
दुम दबाकर दौड़ना ही,
एक चारा रह गया।
दो छलांगे ज्यों लगाई
माट में वह जा गिरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माट था वह धोबियों का,
नील घोला था हुआ ।
नील से वह रँग गया तब,
नील–नीला था हुआ ।
कान सिर धड़ अँग सारे
नील रँग में थे रँगे ।
लौट जंगल जब गया तो
पशु हुए हैरान सब ।
"कौन जो यह आ गया है,
कुछ समझ आया नहीं ।"
पूछते हैं "कौन हो तुम ?
किस तरह से आ गए ?"
"इन्द्र ने भेजा मुझे है,
हुक्म उनका है हुआ,
राज पशुओं का सँभालो,
इसलिये हूँ आ गया ।
'नीलकेशी नाम मेरा
ऐ वनों के कुल मृगो,
जानु टेको भूमि पर तुम
माथ छूओ पैर मम ।"
स्यार देखो धूर्तता कर,
शाह पशुओं का बना ।
सिंह हाथी रीछ सारे
आज उसकी हैं प्रजा ।
हुक्म उसका चल रहा है ।
छत्र उस पर है छता ।
प्राणि उसने सब बुलाये
स्यार बान्धव दूर कर ।
नीलकेशी था सियाना
बोलता मुख से न था ।
रात की यह बात है कि
घूमता था मस्त हो ।
कान में लो जम्बूकों का
हू हुवाना सुन पड़ा ।
नीलकेशी था सियाना
खेद की पर बात है ।
रोक अपने को सका ना
हू हुवाने लग गया ।
सिंह आदि क्रोध से तब,
टूट उस पर झट पड़े,
नीलकेशी देह सारी
चीथड़े चीथड़े हुई
रंग लेकर दूसरा वह
वर्ग अपना छोड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलकेशी नाम का लो,
नष्ट हा ! जम्बुक हुआ।

मणि छोड़ रत्ती क्यों खोजती है ?

प्राप्त मणि जो हाथियों के,
माथ से वह छोड़ कर।
रत्तियों को खोजती क्यों ?
ऐ सजन ये भीलनी,
क्योंकि इस को नहिं पता है,
मान कितने की मणि ।
मान इसको गर' बतादो,
तो न छोड़ेगी मणि ।

स्थूलता में कुछ नहीं।

स्थूलका यों हाथियों को,
हैं चलाती अंकुशें ।
अंकुशें ना चीज जो हैं,
हाथ भर लम्बी नहीं ।
दीप बत्ती दूर करती
सघन तम के तोम को,
दीप ज्वाला जिन में देखो,
इञ्च दो बत्ती नहीं ।
योजनों में फैलते जो
भूधरों को देख लो ।
वज्र ने हैं पंख काटे
जो वज़न में कुछ नहीं ।
इस लिए यह याद रखलो,
ऐ रसिक तुम ध्यान से,
तेज ही बलवान है बस,
स्थूलता में कुछ नहीं ।

दुर्जन साधु नहीं बनते।

दुर्जनों को सीख दे लो,
साधु तो बनते नहीं ।
दूध से यदि सींच दो,
या घीं बहा दो मूल में।
निम्ब के जो वृक्ष उनमें,
मधुरता आती नहीं ।
इस लिए ऐ वत्स मेरे,
दूध घी देना नहीं ।

विद्या के लिए अष्ट त्याग।

चाह विद्या की तुम्हें तो,
छोड़ दो इन आठ को।
काम छोड़ो, क्रोध छोड़ो,
छोड़ दो तुम लोभ को
नींद की तुम अति करो मत,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ दो इस स्वाद को
कौतुकों का शौक छोड़ो,
नौकरी को छोड़ दो।
त्याग दो सिंगार करना,
चाणकी उपदेश है।
चाह विद्या की तुम्हें तो,
छोड़ दो इन आठ को।

बुद्धिर्यस्य बल तस्य, निर्बुध्देस्तु कुतो बलम्।

बल नहीं निर्बुद्धियों में,
बुद्धि में हैं बल सभी।
अतुल बल के सिंह को भी,
एक छोटा सा शशक।
नष्ट करता कूप में है,
छाँव दिखला कर उसे।
सिंह से कहता कि तेरा,
एक प्रतिद्वन्दी यहाँ।
कूप में है रहरहा जो,
छिप गया डर से अभी।
क्रोध से तब क्रुद्ध हो,
सिंह गरजता है रोष में।
गर्जना की प्रतिधुनि सुन,
कूदता है कूप में।
कूद कर वह डूबता है,
प्राण देता है गँवा।
अतुल बल के सिंह को भी,
एक छोटा सा शशक।
जीत लेता शौर्य से नहिं,
बुद्धिबल से देखलो।

महापुरूषों के गुण

विपद में हैं धैर्य धरते,
अभ्युदय में दें क्षमा।
यदि भरी होवे सभा तो,
प्रगट होती दक्षता।
यश कमाने की हमेशा,
देखलो उन में लगन।
व्यर्थ खोते हैं समय नहिं,
वेद में होता व्यसन।
युद्ध में विक्रम दिखाने,
में नहीं है चूकते।
गुण बखाने जो यहाँ पर,
वे सदा मिलते स्वयम्।
कुदरतन हैं सिद्ध होते,
उच्च आत्मा पुरुष में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या सुख कुञ्जी की है

'इन्द्र' विद्या से विनय को,
विनय से लो पात्रता ।
पात्रता से धन मिलेगा,
तो धनों से धर्म भी ।
धर्म से सुख प्राप्ति होगी ।
चक्र ये चलता सदा ।

इन गुणों से रहित मनुष्य पशु समान हैं

मनुज जिनमें ज्ञान है नहिं,
और विद्या भी नहीं ।
धर्म गुण से शून्य जो हैं,
और जिन में तप नहीं ।
प्रेयसी, नहिं दान जिनमें,
और नाँही शील है,
भार भू का हैं बने वे,
मानवों के लोक में,
पशु नहीं तो और क्या वे ?
पुरुष के इस रूप में ।
गीत है, न, कला जिन्हों में,
साहिती रस भी नहीं ।
पूँछ सींगों बिन यहाँ नर,
चर रहे वे जानवर !
तृण उन्हें खाने पड़े नहिं,
भाग उनका है भला ।

वृद्धजन की चार सेवा से यह चार बढ़ते हैं

विनय वाले शील से हैं,
रोज़ जो अभिवादते ।
नित्य सेवा वृद्ध-जन की,
'इन्द्र' जो हैं कर रहे ।
आयु विद्या बल यशों से,
पूर्ण वे होंगे सभी ।

सज्जनों की सम्पत्ति दूसरों के हित के लिये होती है

नद नदी जो बह रहे हैं,
किसलिए हाँ किस लिए !
फूल फलते वृक्ष जो हैं ।
किस लिए वे किस लिए ?
घन बरसते पानियों को,
किस लिए हाँ किस लिए ?
सज्जनों का जो भी कुछ है,
दूसरों ही के लिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहना बेमेल है

चाहती मुझको सदा जो,
मैं उसे नहिं चाहता ।
चाहता जिसको सदा मैं,
वह मुझे नहिं चाहती ।
चाहती वह और को है,
जो उसे नहिं चाहता ।
चाहना के फेर ऐसे,
मदन के ये खेल हैं ।
खेल खिलते ही रहेंगे,
चाहना बे-मेल हैं ।

कौन समझे शंभु को !

क्या न करता प्रभु हमारा,
कौन समझेगा उसे ?
अन्ध होता आँख-वाला,
आँख देता अन्ध को ।
भूप करता रंक को है,
रंक करता भूप को ।
पंगु करता पैर-वाला,
पैर देता पगु को ।
मूर्ख देखो रूप-वाले,
ज्ञानदान कुरूप को ।
हैं विलक्षण काम विभु के,
कौन समझे शंभु को ।

दीन कौन होता है ?

दीन नहिं धन-हीन होने,
से कभी होता कहीं,
दान की असमर्थता को,
दीनपन तुम मत कहो ।
हृदय हों न उदार जिनके,
हाथ कृपणों से कसे ।
दान जो नाँ कर सकें धन,
दीन उनको तुम कहो ।
धन नहीं घर में जिन्होंके,
भाग्य उनका दीन हैं ।
दीन वे पर आप हैं नहिं,
जो कि धन से हीन हैं ।

दुर्जन नहीं बदलते

दुर्जनों को सज्जनों में,
बदलने की नहिं विधि ।
गुदमुखों को लाख धोवो,
क्या बनेंगे वाङ्मुखी ?

चेतना

आपसी झगड़े करोगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन तुम्हारा नष्ट होगा।
राज की अवहेलना से,
जेल का लो, कष्ट होगा।
गुरुजनों की बात ठुकरो,
मृत्यु का भय स्पष्ट होगा।
ईश से यदि तुम लड़ोगे,
वंश सारा नष्ट होगा।

गरीबी से बन्धुओं में रहना

जंगलों में वास करना,
शेर चीतों से घिरे।
वन्य कन्दों औ' फलों से,
पेट भरना है भला।
शीत सोतों के जलों से,
प्यास अपनी को बुझा।
खोखलों में शयन करना,
सेज तिनकों की बिछा।
वल्कलों से जिस्म ढकना,
भी हमें मन्जूर हैं।
पर गरीबी से न रहना,
बन्धुओं के बीच में।

वेद वृक्षों की रक्षा करो।

वैदिकी यह वृक्ष जिसके,
वेद चारों मूल हैं।
शाख उसकी उपनिषद् हैं,
फूल उस पर दर्शनें।
व्याकरण स्मृति आदि सारे,
पत्र सुन्दर शोभने।
फल लगेंगे आर्य, उस पर,
मूल की रक्षा करो।
मूल हीगर मर गया तो,
फूल फल पत्ते सभी।
सूख जायेंगे, झरेंगे,
मूल की रक्षा करो।

ईश का तू गान कर

ईश का यदि गान कर लूं,
तो मुझे क्या फिर फ़िकर।
ईश ने ही तो दिया है,
दूध को वात्सल्य में।
स्तन्य देते मातृ-थन में,
यदि नहीं जगदीश जी,
तो भला कैसे सभी हम,
पालना को प्राप्त कर,
आज तक जीते यहाँ पर,
इस लिए तू हे मनुज !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश का कर गान प्यारे,
ईश का तू गान कर।

जिस देश में यह न हो वहाँ वास करना ठीक नहीं

धनिक हो ना देश में जिस,
राज का ना इन्तज़ाम।
वेदविद्या ज्ञान वाला,
हो न कोई ज्ञानवान।
रोगरक्षा के लिए,
जिसमें न कोई वैद्य हो।
पेय जल की प्राप्ति के हित,
सोत-नद होंवें नहीं।
तो भला फिर कौन रह ले,
देश उस में, एक दिन?

परखें

परख लेने झूठ सच्चे,
जाँचनी-पहिचान से।
दुःख में जो काम आवें।
बन्धु ऐसे सत्य हैं।
आपदें जब आपड़ें तो,
दूर हो जावें न जो,
छोड़ कर तुम को अकेले,
मित्र वे भी सत्य हैं।
भेजने के वक्त जो नाँ,
हिच किचावें तनिक भी,
तुरत जावें काम करने,
भृत्य वे भी सत्य हैं।
वैभवें जब क्षीण होंवें,
तो तुम्हें न छोड़ दें।
धर्म-भार्या हैं वही जो,
साथ मिल कर दुख सहें।

बन्धु के गुण

यह बताओ बन्धु कैसा?
'सत्य' होता, इन्द्र जी॥
रोग तुमको आ सतावें,
चल न सकते पैर हों।
दार सुत भी छोड़ जावें,
बन्धु वे जो साथ हों॥
मृत्यु-संकट आ पड़ें, औ'
विकट हों दुख की घड़ीं।
झेलते होवो मुसीबत,
बन्धु वह जो साथ हों॥
कहत फैले मुल्क में जब,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूख से जनता मरे ।
हाथ आया, बाँट खावे,
बन्धु वह जो साथ हों ।।
मरण होने पर तुम्हारी
सेज-शव ले जाँय जब,
दाह करने के लिए तो,
बन्धु वह जो साथ हों ।।
द्वार पर अपने बुलाया,
हो कभी यदि भूप ने ।
दोष का आरोप देकर,
बन्धु वह जो साथ हों ।।

निश्चित को छोड़, अनिश्चित के पीछे मत जाओ

लो, सुनो ये सीख मेरी
किस तरह के विज्ञ हो ?
छोड़ते हो हाथ में जो,
दौड़ते तुम दूर हो ।
दूर वाले क्या पता है,
पकड़ में भी आँयेगे ?
हाथ वाले तो यकीनन,
शीघ्र ही उड़ जाँयेगे ।

—

कर न तू विश्वास रे

सींग वाले प्राणियों का,
हाथ में या शस्त्र जिनके,
कर न तू विश्वास रे ।
राज कुल के पास रहते,
क्या कभी चुगली लगादें,
कर न तू विश्वास रे ।
नद नदी का क्या भरोसा,
मकर उसमें साँप उसमें,
कर न तू विश्वास रे ।
नारियों के मन मचलने,
स्थिर न रहते प्रेम उनके,
कर न तू विश्वास रे ।

मनुष्य को उपदेश

सोच में तू क्यों पड़ा रे,
छोड़ दे इस सोच को ।
ले विषों से अमृतों को,
कीच से ले स्वर्ण को ।
सर्व-जन से मान ले तू,
नीच से भी ज्ञान ले ।
रल सम यदि भामिनी तो,
अधम कुल से भी उठा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोच में तू क्यों पड़ा रे,
छोड़ दे इस सोच को ।

अनपढ़ों के शत्रु

बाल को जो नहिं पढाते,
सख्त रिपु हैं वत्स के ।
बाप वैरी, शत्रु माता,
एक जैसे, कम नहीं ।
बाल उनके मूर्ख काले,
पढ़ गए, सो हंस हैं ।
शोभते नहिं, बुधजनों में,
वे निरक्षर मूढ़ मति ।
मूर्ख काले, काक जैसे,
शुभ्र उज्वल हँस से ।

'लालना ही लालना'

कह गए आनन्द स्वामी,
लाड़ने के विषय में ।
लाड कर के पालने से,
बिगड़ते हैं रतन भी ।
इस लिए निज पुत्र को,
या शिष्य को ऐ बन्धुओ ।
ताड़ना देना, न करना,
लालना ही लालना ।

ताड़ना में क्रोध हों नहिं,
प्रेम की हो भावना ।
अस्थियों का टूटना तो
स्वप्न में भी हो नहीं ।
पुत्र का हित हृदय में हो,
शिष्य का भी चित्त में ।
भाव बदले का न होवे,
धारणा हो शोध की ।
कामना हो शिष्य में तब,
ज्ञान के उद्बोध की ।
'हो मरी नहिं ठीक की पर,
वृद्ध कवि ने यों कही,
पक्ष लेकर 'लालना' की,
'लालना' की ओर रह ।
ताड़ना होवे न बिलकुल,
मात होकर शिशु विचार,
खोलते दिल ही नहीं ।
प्यार से पुचकार से ही,
काम लेना ठीक है ।
ताड़ना का डर बहुत है,
ताड़ना ना नीक है ।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
श्री धर्मदत्त वैद्य संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताड़ना का हो दिखावा,
ताड़ना ना असल में ।
ताड़ना की नकल होवे,
फेस हों ना मसल में ।
हाथ की जो ताड़ना हो,
चिन्ह हों उसके नहीं ।
ताड़ना का ढोंग होवे,
लालना के भाव से ।
ताड़ना का नाम होवे,
लालना हो असल में ।
लालना ही लालना हो,
लालना ही लालना ।
लालना की पालना हो,
लालना की पालना ।

स्वजन से अवमान का

आग बिन हैं जो जलाते
इन्द्र जी उनको कहो ।
निज पिया के विरह का दुख,
स्वजन के अवमान का ।
ऋण उतरता जो नहीं हो,
सेवना नृप दुष्ट का ।
लोक-वादों की हँसाई,
नरक दुख दारिद्रय का ।
आग बिन ये छे जलाते,
इन्द्र जी ने सच कहा ॥

——

विषघट–मित्र

सामने प्रिय-वाद बोले,
पीठ पीछे पर बिगाड़े,
काम को, वह मित्र कैसा ?
छोड़ दो ऐ तात उसको ।
दूध से है मुख ढका, पर
विष भरा है वह घड़ा ।

रोज प्यारे तुम पढ़ो

रोज प्यारे तुम पढो,
श्लोक पढ़ लो एक प्रति दिन ।
एक नहिं तो आध को ही ।
आध नहिं तो पाव को तुम
पाव को नहिं पढ़ सको, यदि
तो पढ़ो बस एक अक्षर,
दिवस कोई विफल हो नहिं ।
रोज़ प्यारे तुम पढ़ो ।

कष्ट

मूर्खता भी कष्ट है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवनें भी कष्ट हैं।
कष्ट सबसे क्या बड़ा है,
घर पराये वास हो!

अच्छी चीज़ हर जगह नहीं होती

शैल से मणि प्राप्त होती,
पर नहिं हर शैल से।
हाथियों से मोति मिलते,
पर नहीं हर एक से।
लो वनों से चन्दनों को,
पर न वन हर एक से।
विश्व में साधु बथेरे,
पर नहीं सर्वत्र वे।

मूर्ख़ बुद्धिमान में अन्तर

अधम, मध्यम या उत्तम हो?
अधम को धन-चाहना है,
बीच को धन, मान भी।
मान ही बस मान चाहा
उत्तमों ने है सदा।

सत्संगति

बुद्धि की हरती है जड़ता,
पाप को करती है दूर।
मान की करती है उन्नति,
चित्त को करती मुदित।
कीर्ति इस से शुभ्र सुन्दर,
सब जगह है फैलती।
वाणियों में सहजनों की,
सींचती है सत्य को।
सज्जनों की संगतें क्या,
क्या न करती हैं कहो।

वाणी

वालियों से कान की क्या?
मुन्दरी से हाथ की?
स्नान से या लेपनों से?
चन्दनों की गन्ध से?
हार हीरों से कहीं क्या?
सोहती काया कभी?
वाणियाँ ही भूषणें हैं,
धार लो संस्कार कर।
भूषणें घिस जाँयगी पर,
ये नहीं शुभ वाणियाँ।

दीन याचन किसलिए?

भाल पर विधि लिख चुका जो,
वह मिलेगा ही तुम्हें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगलों में वास हो या,
मेरुओं पर जा बसो।
प्राप्त उतना ही करोगे,
जो कि मिलना है तुम्हें।
कूप से तुम घर भरो या,
सागरों से जा भरो।
एक जितना जल मिलेगा,
कम अधिक होगा नहीं।
तो मुझे अब ये बताओ,
'और दे दो' किस लिए?
धनिक जन के द्वार पर जा,
दीन-याचन क्यों किया?

परिवर्तनमय संसार में

कौन जो जीकर मरा नहिं,
और मर कर ना जिये।
चक्र जीवन औ' मरण का
जगत में चलता, प्रिये।
जन्म वो ही काम का जो,
वंश की उन्नति करें।

अर्थोष्मा चली गई–

तन वही मन भी वही है।
देखलो जन भी वही।
बुद्धियाँ उसकी वही हैं।
वचन भी उस के वही।
अब न हैं जब, आज उसमें,
गर्मियाँ धन की रहीं।
बदल कितना तो गया, लो
आदमी पुतला वही।

वित्त की तीन गतियाँ

भोग लो, या दान करलो,
नष्ट होगा जो बचा।
समझ लो, ये सब सयानों,
तीन गतियाँ वित्त की।

दुष्ट जन

लो सुनो ये दुष्ट जन के,
गुण सुनाता हूँ तुम्हें।
वे वजह लड़ते, सभी से,
क्रूरता उनमें भरी।
दूसरों को लूटने की,
चाहना उनमें बड़ी।
दूसरों की योषितों पर,
आँख उनकी है गड़ी।
सुजन औ' जो बन्धुजन हैं,
बात उनकी कटु बड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहन कर सकते, नहीं वे,
दिवस दो क्या दो घड़ी।

और धन हैं किस लिए ?

शुद्ध हैं यदि मन तुम्हारे,
तीर्थ से तो क्या तुम्हें ?
सत्य यदि जीवन तुम्हारे,
तो तपों से क्या तुम्हें ?
यदि सुजनता-शील हो तो
फिर निजों की क्या कमी ?
यदि यशों से हो सजे तो,
फिर सजावट किस लिए ?
ज्ञान धन भरपूर हो तो
और धन फिर किस लिए ?

लोभ, पिशुनता और अपयश क्या हैं ?

लोभ अवगुण ले लिया तो,
और अवगुण लो न लो,
क्या पिशुनता से बड़ा भी,
पातकों में और है ?
अपयशों में डूब कर यदि,
तुम मरो, तो फिर भला,
कौन सा मरना रहा जो,
और हो तुम चाहते ?

मैत्रियों की तुलना

सज्जनों की औ' खलों की
मैत्रियों में फ़रक है।
सज्जनों की मैत्रियाँ तो
शाम की छाया यथा।
सूक्ष्मता से जन्म लेकर,
बाद में बढ़ती सदा।
खल जनों की मैत्रियाँ हैं
प्रात की साया यथा।
वृद्धता से जन्म पातीं
बाद में घटती तदा।

संगति का प्रभाव

तप्त लोहे लाल पर, गर,
बिन्दु जल का आ गिरे।
भाय बन काफ़ूर होता,
नाप भी रहता नहीं।
कमल कोमल पत्र पर गर
बिन्दु जल का आ गिरे।
मोतियों सा है चमकता,
पारदी देता दमक।
समय होवे स्वातियों का,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वही मोती बने ।
सागरों की सीपियों में
बिन्दु जल वह' गर गिरे :
बिन्दु जल तो एक ही है,
संग तीनों हैं जुदा ।
अधम मध्यम और उत्तम
बदल देते बिन्दु जो ।

एक हो ।

एक होवे देव मेरा,
राम हो या श्याम हो ।
एक होवे मित्र मेरा,
भूप हो या रंक हो ।
एक होवे वास मेरा,
ग्राम हो या हो पुरी ।
एक होवे पत्नि मेरी,
सुन्दरी हो या कुरूप ।

हाथ कान और काया किस लिए ?

कान, काया, हाथ तीनों,
किस लिये हैं किस लिए !
'इन्द्र जी' ये अंग तीनों,
किस लिए है किस लिए ?
कुण्डलों को टाँग लें हम,
इस लिए क्या कान हैं ?
कङ्कणों को पहिन लें हम,
इसलिए क्या हाथ हैं ?
चन्दनों को लेप लें हम,
इसलिए क्या देह है ?
वत्स प्यारे भूलना मत,
याद रखना जो कहूँ ।
श्रोत्र श्रुतियों को सुनें औ',
हाथ दानों को करें,
पर जनों के हित हमारे,
काम आवें ये शरीर ।
कान, काया, हाथ तीनों,
इस लिए हैं, इस लिए ॥

मित्र ?

पाप से जो हैं हटाते,
जोड़ते हित से तुम्हें,
दोष को जो हैं छिपाते,
गुण दिखा कर के सदा ।
वक्त आने पर तुम्हारी,
मदद करते वित्त से ।
औ' तुम्हारे हैं, सदा जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध अपने चित्त से ।
आपदों में साथ रहते,
जो तुम्हारे 'जेतली',
सन्त-जन का है कथन कि
'वे तुम्हारे मित्र हैं' ।

अपने आप ?

सूर्य कमलों को खिलाता,
रोज़ अपने आप है ।
चन्द्र भी है कैरवों को,
रोज़ देता खुद खिला ।
जलधरें हैं बारिशों को,
आप बरसाती सदा,
पर जनों के काम भाई,
सन्त हैं आते स्वयम् ।

मनुष्यों के प्रकार

एक ऐसे सत्पुरुष हैं,
स्वार्थ को भी त्याग कर,
काम करते हैं पराये,
लाभ अपना छोड़ कर ।
दूसरे मध्यम पुरुष हैं,
त्यागते नहिं स्वार्थ, पर
हैं पराये काम करते,
(यदि) विघ्न हो ना स्वार्थ में
तीसरे हैं राक्षसों से,
नष्ट करते स्वार्थ हित ।
एक चौथे और भी हैं ।
क्या कहें उनको कहो ?
नष्ट करते पर हितों कों,
व्यर्थ में बिन स्वार्थ के ।

सन्त जन

पूर्ण जिनके मन वचन हैं,
पुण्य के पीयूष से ।
तीन लोकों के लगे उप-
कार में जो रात दिन ।
पर जनों के देख करके,
सूक्ष्म से भी सूक्ष्म गुण ।
मानते मानों कि पर्वत,
हिमनगों से हों महान् ।
आज प्यारी तू बतादे,
सन्त कितने हैं यहाँ ?
फूलते जो फूल से हैं,
निज हृदों में विकस कर ।

मित्र, पुत्र, स्त्री कैसे हों ?

कर सुचरितों को सदा जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुश करे मां बाप को,
पुत्र ऐसे पुत्र जानो,
दूसरे नहिं पुत्र हैं।
चाहती हित जो रमा निज,
स्वामी की व' कलत्र है।
विपद दुख में या सुखों में,
एक हों-सो मित्र हैं।
पुण्य से ये तीन मिलते,
मित्र, पुत्र, कलत्र हैं।

काम कौन पूरा करते हैं?

नीच नहिं प्रारम्भ करते,
विघ्न के डर से डरें।
मध्य जन हैं, छोड़ देते,
बीच में ही कार्य को।
ऊँच की पर 'बान' होती,
विघ्न आवें बार-बार।
काम जब तक हो न पूरा,
वे नहीं हैं छोड़ते।

कौवे और कोयल में फ़रक

काक काला पिक कलूटी,
भेद दोनों में नहीं।
भेद होगा ऐ रसिक रे,
आयगी ऋतु-राज जब।
काक 'काँ-काँ' को करेगा।
पिक सुरों में गायगी।
बैठ करके माधवी या,
अम्बुवा की टहन पर।

कौन देखें जीतता

पापियों को हो तरात,
जगत है ये जानता।
समय मेरा रात दिन है,
पाप कर कर बीतता।
डूबता हूँ या तराकर,
के बचाते हो प्रभु?
होड़ दोनों में लगी अब,
कौन देखें जीतता?

ग्राहिनी तियछवि

पार भव सागर चलें पर,
पार कैसे हम करें?
ग्राहिनी तिय-छवि यहाँ पर,
पकड़ लें तो क्या करें!

——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—मित्र मेरे मत रुको

आस रक्खो मित्र मेरे,
मत रुको तुम मत रुको।
घन घटाएं घोर होंवें,
दिवस काली रात हों।
ज़िन्दगी निष्प्राण होवे,
आस तब भी मत छुटे।
हृदय चाहे रुग्ण होंवें,
ऊब करके हों थके।
शोक छाया छा रही हो,
आस तब भी मत छुटे।
ज़िन्दगी तो युद्ध है, ये,
युद्ध के मैदान में,
हौंसला करके बढ़ो तुम।
आस देखो मत छुटे।
जो पुरानी ग़लतियाँ हैं,
हो गईं तुम से कभी।
सोच में लाओ न उनको,
आज फिर आगे बढ़ो।
रोक से भी मत रुको तुम,
अड़चनों को तोड़ दो।
नवल हो उत्साह, अपने
आस में विश्वास हो।
कदम यद्यपि ज़िन्दगी के,
जो लिए तुमने प्रथम।
लड़ खड़ाते हिचकिचाते,
फ़िकर उनकी मत करो।
आस रक्खो जीत की तुम,
छोड़ना नहिं यत्न को।
देख लेना जीत होगी,
मित्र मेरे मत रुको।

२—चतुर्मुखी प्रेम

(१) पिता के प्रति–

प्यार कर तू निज पिता से,
हो गए जो वृद्ध अब।
प्रेम उन से छोड़ना नहिं,
याद कर तू बालपन।
वत्स जब तुम एक नन्हें,
गोदियों में बैठ कर।
बोलते थे तोतली को,
तो बताओ कौन था?
कौन था जो,
प्यार करता था तुम्हें।
शब्द पहिले पहिल तुमने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कि मुँह से थे कहे।
कौन था जिसने सुने थे,
पास बैठे ध्यान से।
कौन था जो शब्द सुन वे,
मोद से फूला समा।
मुस्कराते चेहरे में,
देखता निज आकृति।
प्यार कर तू उन पिता से,
हो गए जो वृद्ध हैं।
औ' जरा से जीर्ण हैं अब,
आर्द्र थे तेरे प्रति।

(२) माता के प्रति

जन्मदात्री मातु के प्रति,
भाव तेरे आर्द्र हों।
मातु के यदि माथ पर हों,
शोक के कोई शिकन।
तो दिलासा दे उन्हें तू,
दूर कर उनका फ़िकर।
याद कर उस वक्त को जब,
वो तुम्हारे पर सदा।
प्रेम की करती कृपा थीं,
और बरसातीं दया।

(३) भाई के प्रति

भूल तू नहिं भाई अपना,
प्रेम भाइ का, रतन।
सागरों के मोतियों से,
भी अधिक है मूल्यवान्,
भी अधिक सुन्दर सुखद।

(४) स्वसा के प्रति

प्यार कर तू निज स्वसा से,
थाह उसके प्रेम की।
टोह कर देखी कभी ? क्या ?
दे बता मुझको अभी।
चेहरे जिन उदधियों के,
ये तरंगित दीखते,
रत्न उनके हैं तलों में
मोल जिनका है नहीं।

—

३—द्वार मेरे

(क)

शिशु खड़े हैं द्वार मेरे,
क्या बुलालूँ मैं उन्हें.
दाख़ला गर दे दिया तो,
काम कैसे कर सकूंगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह दिया यदि 'भाग जाओ',
तो न मुझ से काम होगा।
सोचता ही मैं रहूँगा,
क्यों न आने था दिया ?
इस लिए यह प्रश्न मेरा,
क्यों बुला कर के न उनको,
काम करना छोड़ दूँ ?

(ख)

द्वार पर कर्तव्य आया,
क्या बुला लूँ मैं उसे !
आगया अन्दर अगर तो,
बदल देगा मार्ग जीवन।
यदि दिया न दाखला तो,
उलट देगा सकल जीवन।
इस लिए है प्रश्न मेरा,
क्यों बुला उसको करूँ नहिं
आमरण मैं अनुसरण ?

(ग)

प्रेम मेरे द्वार आया,
माँगने को दाखला।
दाख़ला गर दे दिया तो,
चाह दिल की सब मिटेंगी।
दाख़ला यदि नहिं दिया तो,
ज़िन्दगी भर आँख मेरी।
अश्रु धारों को बहातीं,
ही रहेंगी, हे सखे।
इस लिए यह प्रश्न मेरा,
क्यों बुला कर के न अन्दर,
आप बिंध लूँ तीर से ?

४—हर किसी से बाँटते हैं

जो लगा इन्सान की उस-
देह पर कोई ज़खम,
'स्कार' है वह बन चुका अब,
याद हम को है नहीं।
बे फ़िकर हम जा रहे हैं,
ज़िन्दगी की राह पर।
वक्त आता है कि उस में,
दर्द होती है शुरू,
जागतीं समवेदनाएँ,
जागतीं संभूतियाँ।
है पिघलता दिल हमारा,
दुःख उसका देख कर।
बे फ़िकर हम तब न चलते,
ज़िन्दगी की राह पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर किसी से बाँटते हैं,
दुःख उस के दाह का।

५–ईश्वर की आवाज़ कहाँ है ?

ईश वाणीं सुन पड़ेंगी,
ख्याल लेकर गिरि वनों में,
गगन चुम्बी गिरि वरों की,
चोटियों पर मैं चढ़ा।
ईश वाणी श्रवण करने,
चढ़ गया मैं मन्दिरों पर।
कलश सुन्दर मन्दिरों के,
पर सुनाई दी नहीं।
गॉड तरी वॉयस् सुनने,
चर्च सारे छान डाले।
गुफ़्तगू होवे ख़ुदा से,
मस्जिदों में मैं फिरा।
आँख आगे चित्र आये,
कान में गूँजें उठीं।
'भटक मत तू, ढूँढ मत तू'
जनगणों से पूछ, जा।
हैं उन्हीं में शब्द मेरे,
हूँ उन्हीं में बस रहा।
हैं उन्हीं में चित्र मेरे,
हैं उन्हीं में वाक्य मेरे,
हाँ, उन्हीं में वाणियाँ।

६–शब्द छोटे

शब्द छोटे प्रेम वाले,
दो दिलों को जोड़ते।
शब्द छोटे क्रोध वाले,
दो दिलों को तोड़ते।
"क्यों किया ये काम तुमने ?"
"चूंकि तुमने था किया।"
रञ्ज पैदा हो गया लो,
चूँकि बदला है लिया।
इस तरह पैदा हुआ तब,
वैर अंकुर मित्र में।
"दुःख है अफ़सोस मुझको
मैं करूँगा फिर नहीं।"
"फ़िकर की क्या बात भाई,
हो गया अनजान में।"
इस तरह से, जुड़ गए थे,
हृदय जो उन के जुदा।
शब्द छोटे प्रेम वाले,
दो दिलों को जोड़ते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७-उमर कितनी है तुम्हारी ?

वृद्ध हो या हो जवान ?
स्वप्न हैं यदि ज़िन्दगी के,
सो गये जाकर कहीं ?
शीत हैं आशा तुम्हारीं,
जोश उनमें है नहीं।
उन्नती (ति) की चाह नहिं यदि
ज्योति नहिं संघर्ष की।
ठीक कहता, जग है तव कि,
वृद्ध, हाँ तुम हो गये।
लक्ष्य जीवन के तुम्हारे,
स्पष्ट हैं यदि दीखते,
पूर्ति जिनकी में लगे हो,
तो नहीं तुम वृद्ध हो।
जन्म-दिन को गिन कहो मत,
वृद्ध हूँ, मैं हो गया।
आयु से नहिं वृद्ध होता,
आयु चाहे कुछ भि (भी) हो।
झुर्रियाँ नहिं वृद्ध करतीं।
पलित केशें भी नहिं।
शक्ति मन की जाँच देखो,
मन युवा है तो युवा,
मन न है यदि अग्रसर तो,
वृद्ध हो तुम हो गये।

८-हर्ष वर्षा (पड़ोसिन के प्रति)

देख कैसी आज मुझ पर,
हर्ष की वर्षा हुई।
ओ पड़ोसिन, आज तेरी
बेल फूली रम्य से।
बेल सुन्दर एक प्यारी,
जो पड़ोसिन ने लगाई।
लाल लाल गुलाब सुमनें,
विकस उस पर छा गईं।
फूल सुन्दर हृदय हारी,
ओह कितने हैं सभी।
हृदय हैं आनन्द लेते,
जो भि (भी) उनको देख लें।
काश ! कोई माप देवे,
हर्ष कितना दृश्य में।
मालकिन तो है पडोसिन,
शक न इस में है ज़रा।
खर्च उसने ही किया है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मे(ह)नतें उसने हि (ही) कीं।
मोद पर हम सब उठाते,
देख कर उन फूल को,
हैं उसे उतने ही प्रिय, जितने
कि मुझको हैं. प्रिये।
हर्ष का सुख-स्त्रोत सुन्दर,
सुमन दोनों के लिये।
एक सा ही हैं बरसते,
फूल खिल आनन्द को।
प्राप्त कर आनन्द-धन वह
होगया कितनी धनी!
कम न हूं हमसाया से मैं,
हर्ष-धन की प्राप्ति में।
तो करो मत हृदय छोटा,
हर्ष के सुख-दान में।
"देखलो, है हर्ष देती,
बेल वह हमसाय की।"

९-पड़ोसिन के उद्गार

मैं तुम्हारी हूं पडोसिन,
बेल जिसने है लगाई।
जो कि तुमने है सराही,
धन्य हूँ, मैं खुश बड़ी।
जानकर कि हर्ष उतना।
ही उठाती हृदय में है
आपके, जितना उठाती
बेल मेरे हृदय में।
जान कर यह बात प्यारी,
आज खुशियों से भरी।
मूल्य फूलों का समझती
पूर्णतः ना मैं कभी, (यदि)
जानती न हृदय अपने
निटक-वासी आपका।
खूब मैं हूँ अब समझती
हर्ष सब के मन उमड़ता
देखते जो फूल मेरे,
जो न मेरे हैं सभी के,
हर्ष लेते जो उन्हीं से
हर्ष लेना जो उन्हों का
हर्ष मेरा है भि (ी) वह।
(अर्थ उनका हर्ष लेना भी
मेरे हर्ष को बढ़ाता है।)
हर्ष की यह बाँट प्यारी,
जो सभी ने लूट ली,
मैं पड़ोसिन और सब जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं बराबर, एक से ही
हर्ष के इस लाभ में।
इस तरह से बेल को मैं
हाथ से अपने लगा,
हूँ, स्वयं आनन्द लेती,
और सब में बाँटती।
बाँट कर आनन्द सब में
द्विगुण या चौगुण नहीं,
अनगिने गुण हूँ बढ़ाती,
बेल फूली रम्य से।
हर्ष देती बेल सब को
हर्ष लेती मैं भि (,ि) वह।
हर्ष देती बेल जिन को,
हर्ष उनके का भी हर्ष।
आज मुझ को मिल रहा है,
हर्ष है ये दोहरा।
हर्ष में भी हर्ष है ये
हर्ष का सुख-वर्ष है।
बेल फूली रम्य से, हों,
बेल फूली रम्य से।
'इन्द्र' कवि की भावना से
हर्ष फूला हर्ष से,
बेल फूलें, हर्ष का तो-
आयुती है हर्ष होता,
हर्ष फूले हर्ष से।
(आयुती-अयुतों गुणा)

१०—कर्मठी स्वच्छन्द है।
कर्म में आनन्द है॥

ठहरती नहिं इक घड़ी, वह
काम से जकड़ी पड़ी।
ड्यूटियाँ छोटी बड़ी,
आँख आगे हैं खड़ी।
मुँह सवेरे ही उन्हें,
चाय देनी बिस्तरी,
रात को भी जागना,
घर सभी सम्भालना।
पुत्र-पति के काम हैं,
काम आठों याम हैं।
वक्त खाली है नहीं।
बेल मिलता ही नहीं।
मगर उकताती न वो,
तनिक घबराती न वो,
कर्म में उत्साह है,
कर्म-प्रेम अथाह है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय में खुशियाँ बढ़ी,
काम की लहरें चढ़ीं।
गाल सुस्मित. भी अधर
काम कर कर के मधुर।
"काम में ही राम हैं,
काम में ही श्याम हैं,
काम को मैं ध्याऊँगी,
राम अपना पाऊँगी।
काम-माला फेरनी।
काम धुन मैं टेरनी।
काम ही स्वच्छन्द है।
काम में आनन्द हैं।"
समझती जो काम को
एक भारी फन्द है?
समझ उसकी में फ़रक
मूढ़ वह मतिमन्द है।
"कर्म में नहिं दुख मुझे,
कर्म तो आनन्द है।
पुत्र का ये काम है,
और पति का काम है।
काम जिसमें घर वही,
घर वही तब स्वर्ग है।
भूमि पर अपवर्ग है।
काम मेरा धर्म है।
धर्म मेरा कर्म है।
काम लाता अर्थ है।
काम बिन सब व्यर्थ है।
काम ही तो काम है।
काम का ही नाम है।
काम ही तो मोक्ष है।
वर्तमान परोक्ष है।
काम का क्या दुख मुझे?
काम का क्या भार है?
काम बिन बेकार हूँ।
ज़िन्दगी का भार हूँ।"

११–जीवन की प्रात में

इस गली के मोड़ पर
छे घरों को छोड़ कर
मैं मिला था दौड़ कर,
मित्र मेरा पास था,
मित्र के घर वास था।
जीवनी तब प्रात थी
हर दिनों की बात थी
हर गली में ज्ञात थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो दिलों की चाह है,
नेह की ये राह है,
प्रेम की ये दाह है,
छुट्टियाँ जब आईं थीं,
घण्टियाँ टनकाई थीं,
कुण्डियाँ खड़काईं थीं।
मिलन का उल्लास था,
मित्र मेरे पास था।

१२– जवानी की रात में

ये जवानी रात आई,
ज़िन्दगी की आँधियाँ।
आँधियों में हैं अन्धेरे,
फुरसतें मिलती नहीं।
धन जमा हो यश कमावें,
नाम दुनियाँ में बढ़े।
ये फ़िकर हैं रात दिन।
मित्र से मैं कब मिलूँ ?
कुशल पूछूँ, क्षेम पूछूँ ?
मित्र मैं भूला नहीं,
ये बताऊँगा उसे,
काम में मशग़ूल हूँ
इस लिए नहीं आ सका।
मैं मिलूँगा मैं मिलूँगा,
पूर्ण मुझ को आस है।
फेफड़ों में साँस है,
मित्र मेरे पास है।
चाह मेरी जा मिलूँ,
उस पुराने मित्र को,
चाह मेरी देख लूँ
उस पुराने चित्र को।
तीव्र जीवन, गति महान,
भागता जाता जहान।
मिलन मैं हूँ चाहता।
हाँ उसे भी है पता।
वह मिला न है मुझे,
मैं मिला न हूँ उसे।
कल मिलूँगा मैं ज़रूर,
कल मिलूँगा ख्याल है।
कल निकलते ही गए,
कल गुज़रते ही गए,
कल कलों में मिल गए।
आ गए जाते गए,
दूर हम होते गए।
पास जो था मित्र इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस गली के छोर पर,
हाय! है वह दूर कितना
सोचता हूँ आह भर।
वक़्त गुजरा बरस जितना
पर न मैं हूँ मिल सका
रोज़ उसको याद कर।
इस गली के मोड़ पर,
मैं मिलूँगा दौड़ कर।
मित्र मेरा पास है,
जो पुराना ख़ास है।
मेज़ पर ये तार है,
जगत से वह पार है।
"स्वर्ग में अब है गया"
'इन्द्र' आज उदास है,
मित्र अब न पास है।
मिलन की न आस है।
शहर वो ही ये यहाँ
बस रहे जिनमें जहाँ
फ़ुरसतें उन को कहाँ
पल न नर के पास है
नर पलों का दास है।
बीतते हैं रात दिन,
बीतते हैं पक्ष गिन,
बीतती हेमन्त है,
वर्ष होता अन्त है।
दिल हुआ बेदार है
फलक भी लाचार है।
मित्र अब ना पास है
मिलन की ना आस है।

१३—अनजाने बोला शब्द

पोहली के फूल से ये
बीज कितने थे उड़े ?
झाड़ियाँ झंकाड़ दे कर,
खेत सारा भर गए।
पोत में था एक छोटा
छिद्र जो बारीक सा।
पानियों ने पालिया, लो
पोत डूबा उदधि में।
आग की चिन्गार थी जो
एक छोटी सी उड़ी,
जलगए जंगल बड़े भी
भस्म हो कर राख में
बिंध गया वह शब्द जो,
अनजान में बोला गया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घाव गहरा कर गया था,
हृदय कोमल चीर कर।
तुच्छ सी घटना घटी थी,
जो हमारे से कभी।
वक्त आने पर बनी वह,
रौद्र औ वीभत्स भी।

१४—माली को सम्बोधन

ओ, क्या पता तुझको जगत में ?
प्यार देता प्यार को ?

(१)

ऐ, बन्द कर मत बाग माली।
खोल दे इस द्वार को।
मुझ को बुलाती, फूल वाली,
देख तू उस डार को।
तुझ को पता क्या है जगत में
प्यार देता प्यार को ?

(२)

लो डार पर कुछ भौंर आये।
कर रहे गुञ्जार को।
गुन गुन गुना गाने सुनाये,
फूल की हर क्यार को।
तुझ को पता क्या है जगत में,
प्यार देता प्यार को ?

(३)

मधु माधवी उन्मत्त हो कर
चूमती सहकार को।
सहकार निष्ठुर हृदय हो कर
क्यों छिपाये प्यार को ?
तुमको पता क्या है जगत में,
प्यार देता प्यार को ?

(४)

हलका किया कुछ कोकिलों ने,
प्रेम के सुख भार को।
पहिचान पाया नहिं दिलों ने
प्रेम के ससार को।
तुझ को पता क्या है जगत में,
प्यार देता प्यार को ?

(५)

ढूँढा बहुत पर पा सका ना
नारियों के प्यार को,
नर ने झुकाया, शीश अपना,
मान कर निज हार को।
तुझ को पता क्या है जगत में,
प्यार देता प्यार को ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब और अब

याद मुझ को, याद मुझ को,
याद मुझ को याद हैं ॥
जन्म गृह मेरा सलोना
याद मुझ को खूब है ॥
शाद्वली वह सस्य सी जो
याद मुझ को दूब है ।
हर सुबह सायं झरोखे
बैठ रवि को देखना,
लाल पीले रंग वाले,
बादलों का लेखना ॥
रोज़ आना, रोज़ जाना
सूर्य का मैं वक्त पर,
देख कर हैरान होता,
काल के इस नियम पर ॥
याद मुझ को वो गुलाबें
कुछ गुलाबी कुछ सफेद ।
रम्यता में पर न जिनकी
तनिक सा अन्तर व भेद ॥
वो बुनफ़्शे, तित्तली वो
रोशनी-सी रूप वाली ।
लीलिया वो लालपीलीं
छाँह जिन पर धूपवाली ॥
याद हैं सब याद हैं ॥
झांपलों ने था बनाया
घोंसले को प्रेम से ।
लिलक की उन झाड़ियों में
मिल बसें थे क्षेम से ॥
स्थान मुझको याद है वह,
द्वार के अत्यन्त पास,
भाई मेरे ने लगाया,
था जहाँ पर अमलतास ॥
वृक्ष सुन्दर रम्य पुष्पों
से भरा पीला प्रकाश ।
आज तक भी उग रहा है,
और देता है सुवास ॥
याद मुझ को खूब भूला,
भूलता जो रोज़ था ।
वायुवों की ले हिलोरें
भूलता सब सोज़ था ॥
सोचता था पक्षि भी तो,
गगन में उड़ते यदा
शीत शीकर से मिली हैं,
वायुवें लेते तदा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोच ऐसा हृदय मेरा
पख सा हलका हुआ,
रोज़ भरता था उड़ाने,
मौज में डूबा हुआ।
आज पर हैं भीह भारी
तप्त चिन्ता ज्वाल से।
ग्रीष्म की इन वापियों के
शीत जल में शक्ति क्या?
दूर करदें तपन मेरी,
तप्त मेरे भाल से।
याद मुझ को कैल के वे
वृक्ष ऊँचे जो बड़े।
सघन, छूते स्वर्ग को थे,
सरल, सीधे से खड़े।
शैशवी वह समय प्यारा!
काश, मैं मरता तभी,
वत्स की उस अज्ञता में
स्वर्ग कितना पास था?
कैल जितना उच्च था बस
दूर उतना वास था।
आज रोशन-वर्ष लाखों,
की न चालों से कभी,
पा सकूँगा स्वर्ग चाहे,
यत्न करलूं मैं सभी।
बाल पन के खेल प्यारे
भूल क्या मैं जाऊँगा?
ध्यान जब जब लाऊँगा तब
स्वर्ग-सुख को पाऊँगा।
बाल पन की बात प्यारीं
आज तक वह याद हैं।
याद मुझ को, याद मुझ को,
याद मुझ को, याद हैं॥

१६–मित्रता, एवं मित्र

"रात दिन मरता हूँ तुझ पर
प्रेम मेरा है अनन्त।"
शब्द यद्यपि हैं सुहाने,
पर मुझे नहिं चाहियें।
प्रेम की निष्ठा न इनमें,
सत्य की भिष्ठा नहीं।
झूठ की विष्ठा है इनमें,
ये मुझे नहिं चाहियें।
"चाह तेरे प्रेम की तो
सागरों सी है अथाह।"
खा न तू सौगन्ध ऐसीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये सभी निर्गन्ध हैं,
फूकनें ये फूक की हैं।
दाँत की हैं घिस घिसा
होंठ की ये हैं हुंठाई॥
जीभ की है चर चरा।
"टूट सकता प्रलय तक नहिं
प्रेम मेरा है अटूट"
प्रण न कर तू मित्र ऐसे
वचन होते हैं ये झूठ।
सार क्या रे इन प्रणों में
खोखले निःसार हैं।
बुल बुले ज्यों पानियों के,
फूटते बेकार हैं।
"शपथ तेरी मित्र मेरे
मित्र मेरा, तू परम।
अटल है सम्बन्ध अपना
टल नहीं सकता कभी।
मित्र प्रियतम, सूत्र दृढ़तम,
मित्रता का बँध गया।"
शपथ ये ले कर कहो मत,
मित्र हम पक्के हुए,
शपथ का कुछ अर्थ है नहिं।

शपथ ये तो व्यर्थ हैं।
एक वारी भी करो मत
वायदे ये प्रेम के।
"प्रेम मेरा बहुत गहरा
उदधि से गम्भीर है।"
ध्यान रक्खो भेद हम में
हो न पैदा जाँय रे।
कह न बैठें वचन ऐसे
जो चुभें, आवेग में।
बात आपस की कभी में
हों विचार जुदा यदि
तो न मारो डंक-ताने
चोभ-वाली कर बहस,
मित्र-वाली भक्तियों से
ही भरें हों भाव बस।
चोभ दे मत मित्र को तू
ख्याल में यदि हो फ़रक।
ख्याल बेशक छोड़ दे तू,
प्रेम दे तू मत झटक।
तब न करना भाई, फ़िक्रें
मित्रता के छूटने की।
मित्रता चलती रहेगी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोद-मैत्री लूटने की ।
'कसम तेरी, मित्र मेरे
हम जुदा होंगे नहीं ।''
कसम खा कर के जतामत,
मित्र तू मेरा परम ।
प्रार्थना प्यारे यही है,
तुच्छ सी तुझ से अधम ।
मित्र यदि तू है परम तो
खा न कोई भी कसम ।
कसम से नहिं मित्र होता,
मित्रता की कर शरम ।
कसम तो है भरम भारी
मत गँवा इसमें जनम ।
प्रेम की दे दे सबूतें
प्रेम करना है फ़िज़ूल,
प्रेम की दे दे दुहाई
प्रेम करना है उलूल ।
आर्द्र तेरा है हृदय यदि
तो सबूत न चाहियें ।
प्रेम है यदि सत्य तो फिर
ये दुहाईं किस लिए ।
प्रेम वाले कथन तो ये
वदन केवल के वचन ।
हृदय से निकले हुए हों
हृदय के ही हों कथन ।
मित्रता की भक्ति यदि हो
कूट कूट भरी हुई ।
मित्रता की शक्ति तुम में
यदि अटूट धरी हुई ।
हो नहीं सकता कभी तव
मित्रता वह शीत हो,
हो नहीं सकता कभी तव
छूटती वह प्रीत हो ।
द्वेष ईर्ष्या शक शुबह यदि
बीच में आवें कभी,
तो उन्हें आने न देना,
मित्रता करते खतम ।
मित्रता सहती न इनको
मित्रता से ये विषम ।
स्तम्भ हो विश्वास तेरा
थाम लेवे मित्रता ।
मित्रता की ये इमारत,
टूटने पाये नहीं ।
कथन भी क्या मित्रता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्रता है कर्म की।
मित्रता इक धर्म होता,
मित्रता कर धर्म की।
धर्म से तू मित्र बन कर
पाल मित्रों का धरम,
मित्रता यदि चाहता स्थिर
मित्रता के कर करम।

प्रेम का स्वरूप

धारणा हो प्रेम की।
भावना हो प्रेम की।
शक्ति होवे प्रेम की।
भक्ति होवे प्रेम की।
मिष्ठता हो प्रेम की।
शिष्टता हो प्रेम की।
आर्द्र होवें प्रेम में
हार्द्र होवें प्रेम में।
वात होवें प्रेम में
प्रात होंवें प्रेम में
रात होवें प्रेम में
तात हों हम प्रेम में
कर्म होंवें प्रेम के,
धर्म होंवें प्रेम के,
शक न हो ना शंक हों
संशयें ना कंक हों,
शपथ हों ना प्रेम में,
कसम हों ना प्रेम में।
कथन थोथे प्रेम में
वचन खोखे प्रेम में।
ले न तू सौगन्ध को
या प्रणों की गन्ध को।
क्यों किया सन्देह को
दुख दिया निज देह को।
तुम प्रतिज्ञा मत करो,
निज अवज्ञा मत करो।
जो कसौटी पर कसें।
मित्र ही वो हैं सही।
जो तुम्हारे पर हँसे,
मित्र तो वो हैं नहीं।
यदि तपाने पर उसे
चमक आवे और भी,
यदि जलाओ तो उसे
दमक आवे और भी,
तो उसे समझो प्रिये
कुन्दनी वह मित्रता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्ध फैले चतुर्दिक
महक जावे जगत सब
तो उसे समझो प्रिये
चन्दनी वह मित्रता।
खोट जिसमें हो नहीं,
सोट जिसमें हो नहीं,
ओट जिसमें हों नहीं,
चोट जिसमें हों नहीं,
पावनी वह मित्रता।
विनति हैं ये दास की,
झलक हों विश्वास की,
तरन हों उल्लास की,
पलक हों परिहास की,
तोष हो मन में सदा,
रोष ना होंवें कदा।
स्वार्थ की कुर्बानियाँ,
मित्र के हित हों सभी।
प्रणय के बन्धन बँधे,
मित्र से नित हों सभी।
मित्र माँगे या नहीं,
चीज़ आफर मैं करूँ।
मित्र जाने या नहीं,
जाँ निछावर मैं करूँ।
वञ्चना होंवें नहीं,
ना दग़े होंवें फरेब,
आर्य पुरुषों के लिए तो
हैं बहुत बदज़ेब वो॥

क्रूर सुन्दरी

वीर तुम हो क्यों भटकते?
कौन दुख तुम को महान्?
शान्त सारी प्रकृति है पर,
चित्त क्यों तव दह्यमान?
कौन वो फिकरें, परेशाँ
कर रही जो वीरवान्?
मौनसूनें जा चुकी हैं,
उदधि सारा शान्त है।
वीरवर फिर भी तुम्हारा
मन कहो क्यों भ्रान्त है?
भ्रुकुटि चिन्ता मग्न क्यों है,
धैर्य खोकर वीरवर?
ध्यान में जब लीन मुनि मन
शान्त गंगातीर पर!
चक्करों को काटते हो,
पर्वतों की ढाल पर?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो उतरते और चढ़ते
पर्वतों की भाल पर ।
क्या मदन के तीर लग कर
होगया छलनी बदन ?
क्या नसीबों में तुम्हारे
चैन है ना है शयन ?
चेहरा फीका पड़ा क्यों ?
क्या विरह से हो दुखी ?
क्यों जगा वैराग्य तुम में ?
क्यों जगत से बेरुखी ?
प्रश्न सुनकर वीरवर ने
इस तरह उत्तर दिया,
काँपता था जिस्म जिसका
थर थराता था हिया ।
"दूब मखमल सी हरी थी,
ओस जिस पर थी झरी,
प्यार सुन्दर की परी वह
आह जिसने थी भरी ।
फूल-कलिका अधखिली थी
धन्य मैं, जिसको मिली,
कुसुम उसके आभरण थे
चरण दोनों कोमली,
गौर ग्रीवा गौर वदनी
अग सारे सुनहली ।
अलक कुञ्चित कर्ण पर थे
अधर बिम्बा वर्ण के ।
भ्रमर आते थे यकायक
अधर-रस लेने लपक,
आँख दोनों बन्द करती,
पलक जाते थे झपक ।
स्नेह सिञ्चित और कुञ्चित
शीश पर था केश-जाल
स्कन्ध पर थी वेणियाँ जिन-
की नितम्बों तक अयाल ।
केश नाजुक सूत से, निख-
रा रहे थे रूप को ।
बाँधने में शक्त थे जो
सबल भारी भूप को ।
अश्व पर उस को चढ़ा कर
अश्व को आगे बढ़ा,
ले चला सुख में समा कर
सीध में नजरें गड़ा ।
प्रेम में लेखा उसी को
रात दिन देखा उसे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक टक भूला न उस को
रात दिन भेखा उसे।
अश्व पर चढ़ साथ मेरे,
गोद में बैठी हुई।
बाँह से मुझ को पकड़ कर
मोद में ऐंठी हुई।
मस्त हो गई गान में वह
मधुर छेड़ी तान इक,
असर ऐसा था हुआ लो
जिस्म दो पर जान इक।
आँख उसने तब घुमा कर
भर नज़र देखा मुझे।
और मानो था कहा यह
प्यार करती हूँ तुझे।
गहन गिरिकी कन्दरा में
ले गई मुझको परी
अश्रुधारा से धरा को
आर्द्र करती सुन्दरी।
प्रेम में तब झूम मैंने
हर पलक को चूम कर
चार देदीं छाप उन पर
चुम्बनों की प्यार कर।

कन्द मूलें स्वाद वाली,
प्रेम की थी भोजनें
मधुर मधु से भर परोसीं
उस परी ने ओदनें।
मलयवासित थी बयारें,
सुन्दरी की लोरियाँ!
गाढ़ स्वप्नों से बँधा मैं,
नींद की थी डोरियाँ।
स्वप्न था क्या? कह रही थी
नयन मस्ती से भरे,
बाग आशा के सुहाने
थे बहारों से हरे।
"प्रेम मेरा साथ तेरे,
'प्राण मेरे' 'नाथ हो'
मैं तुम्हारे हाथ हूँ पर
तुम न मेरे हाथ हो।'
होश खोकर नींद गहरी
में पड़ा, मैं सोगया
शब्द हैं नहिं जो कहूँ कि
क्या अचम्भा होगया?
नृपति आये चक्रवर्ती
जो कि योद्धा धीर थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूप औ'युवराज आये,
जो कि भट गम्भीर थे।
उन सबों ने एक स्वर से
दी मुझे यह चेतना,
क्रूर है यह सुन्दरी तो
दास जिसका तू बना।
हा! भयंकर शब्द ये थे,
कान मेरे जो पड़े।
बोलते थे मुख डराने
हृदय मेरे आ गड़े।
चौंक कर के मैं उठा तो,
देखता क्या हूँ वहाँ।
बर्फ़ सी ठण्डी हवा में
एक सूना था जहाँ।
इस वजह से हूँ भटकता
इस जगह एकान्त में।
थरथराता काँपता हूँ,
शैल के इस प्रान्त में।
जगत सारा शान्त है पर
शान्ति मुझको है कहाँ?
सूर्य शशि से कान्त नभ है,
कान्ति मुझ पर है कहाँ?
चेहरा फीका पड़ा है।
लालियाँ सब उड़ गईं।
पर लगा कर जब परी वह
सुन्दरी सी उड़ गई।
शैल पर चढ़ता उतरता,
विरह झूले झूलता,
क्रूर परि को याद करता
एक छिन नहिं भूलता।
एक छिन नहिं भूलता।

ज़िन्दगी?

यदि कभी हम खेतियों में
घूमते फिरते हुए,
देखना खुद चाहते हों,
खेल गिलहर के मधुर।
घास में ले जा नटों को
है छिपाती किस तरह?
और कड़ कड़ तोड़ उनको
है कुतरती किस तरह?
आँख भर कर देखना पर
भी न होवे' गर नसीब
तो न अच्छी ज़िन्दगी है
ज़िन्दगी वह है गरीब।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

यदि कभी हम घाटियों में
घूमते फिरते हुए,
खेल झरनों के छलकते
झाँक लें गिरते हुए।
जी भरे नहिं देख कर, पर
एक दो छिन में, अटक।
टकटकी को बाँध सक यदि
खोल देखें नहिं पलक,
हाँ! न वह जीवन; न जिसमें
चेतना की हो झलक।

(३)

यदि कभी हम घन वनों में
घूमते फिरते हुए,
खेल देखें वानरी के
पथिक बन चलते हुए,
पेट चिपटा वत्स अपना
टहन से जाती लटक
नारिकेलों को झटक कर
भूमि पर देती पटक।
जामुनें चुन चुन है खाती
कुमर को देकर लचक,
दृश्य सुन्दर चक्षुएँ यदि
खोल देखें नहिं पलक
तो भला क्या ज़िन्दगी वह
मौत ही की है मटक!

(४)

अकल फ़िकरों से फिरी हों,
शान्ति मन में हों नहीं।
रात दिन चिन्ता घिरी हों
कान्ति तन पर हों नहीं।
समय हो ना सोचने को,
फ़ुरसतें हों हीं नहीं।
फ़िकर ये तुमको डुबो कर
छीन लेंगे सब सबर
ओ! तुम्हें तब बख्श देंगे
कुछ नहीं तो इक कबर,
या फिरायेंगे तुम्हें तब
चैन खोकर दर बदर।
सैकड़ों फिरते हजारों
जिस तरह से ले फ़कर।
ज़िन्दगी का क्या मज़ा, उस
ज़िन्दगी में है कज़ा।

(५) कुहल की इक धार निर्मल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि प्रवाहित हो रही ।
सस्य श्यामल से सुशोभित
लहलहाती हो मही,
मास मधु में फूल फल से
खूब हो जब भर रही,
भेड़ बकरी गाय भैंसें
निकट ही हों चर रहीं,
पर मुझे नाँ हो मुयस्सर
देखना भी आँख भर
ओ ! बजा कर बाँसुरी 'गर
राग को नाँ भर सकूँ,
तो भला होगा प्रभूजी
आज ही 'गर मर सकूँ ।

(६)

यदि कभी मैं महफ़िलों में
आ मिलूँ भटका हुआ,
और देखूँ सुन्दरी इक
दिल कटे, झटका हुआ ।
सुन्दरी की आँख सुन्दर,
देख लें मुझ को वहाँ,
मैं न उनको देख, पाऊँ
तो भला जाऊँ कहाँ ?

नज़र का उसका मिलाना,
चेहरे को मुसकरा,
गान का उसका तराना
साँस ने जब उर भरा ।
नाच नचना औ' नचाना
ताल पर ले पैंतरा,
"जी भरे का देखना," कर
देख पाऊँ न उसे,
देखने के योग्य जो है,
तो सल्हाऊँ फिर किसे,
ज़िन्दगी फिर ज़िन्दगी क्या ?
जो सलाहा ही नहीं ।
आँख ने जी भर न ताका,
जी भरा जब ही नहीं ।

(७) सूर्य के उजले उजाले
में कभी जब हे अलि !
खिल रही होंगी तटों पर,
लाख लिलियों की कलीं
चमकती नभ नील पर हैं
जिस तरह तारावलि ।
खेलती होंगी समीरें,
मधु मदों से बावली,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम सुन्दर वह नज़ारा
आँख देखें यदि नहीं,
तो बताओ दिल दिलासा
किस तरह लेकर रहें ?
किस तरह सौन्दर्य धारा,
हृद् तलों में तब बहें ?
आँख भर कर देखने को
भी न होवे वक्त 'गर
तो भला क्या ज़िन्दगी वह,
मौत उस से बेहतर ।

आह्वान गीत

उच्च और महान आत्मा,
युग युगों में जो हुए,
रास (रासो) औ' इतिहास जिनके
चरित से भूषित हुए ।
अमर बलियाँ चढ़ गये जो,
देश सेवा कर गए ।
ज्ञान के उपदेश वाले,
गीत सुन्दर गा गए ।
बोध जग का कर गए जो
हृदय जिनके थे उदार ।
देख दुख को द्रवित होते

सदय जिनके थे अपार ।
और जिनके कारनामे
हर हृदय पर हैं हरे,
भाट चारण गा जिन्हों के
गीत हो गये बावरे ।
मन्दिरें क्या, कन्दरें क्या,
देश के हर थाँव में
गान जिनका गा रहे हैं,
हर गली हर गाँव में ।
ये न तेरा, वो है मेरा
का जिन्हें था ही न ख्याल,
सकल वसुधा एक थी बस
हृदय जिनका था विशाल,
ले लिया था व्रत जिन्होंने
मनुज सेवा का परम ।
धन्य थे जो; कार्य जिनके
जन गणों ने भी स्वयम्
स्वर्ण अक्षर से सजा कर
कीर्ति-स्तम्भों पर लिखे ।
ज्ञान के गुरु थे जगत के,
और जिन से सब सिखे,
आ पुनः सभ को जगाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज्ञता को दूर कर।
जगत सुन्दर फिर बनाएँ
दुष्टता को नष्ट कर।

किस लिए हूँ जी रहा ?

रिपु न नर का बन सके नर,
आपसी व्यवहार में।
सूत्र में सब प्रेम के इक
आ बँधे हों प्यार के।
भ्रष्ट-मति होंगें न तब जब
रोष होंवे ही नहीं,
दुष्ट-जन होंवें न जब तब
दोष होंगे ही नहीं।
लड़ सकूँ मैं दीन के हित
और हँसते मर सकूँ।
इसलिए हूँ जी रहा मैं,
इस लिए हूँ जी रहा।
'इन्द्र' ओ इस जगत में तुम
जी रहे हो किस लिए ?
दलित यदि बल हीनता से
खो चुके अधिकार हों,
हक उन्हें उनका दिलाऊँ
इसलिए हूँ जी रहा।
शोक दुनियाँ से भगा कर
के सुखों से भर सकूँ
इस लिए हूँ जी रहा, हाँ
इसलिए हूँ जी रहा।
सत्य-पथ के पथिक नर 'गर
डर रहे हों दनुज से,
तो उन्हों के डर हटा कर
विजित दनुजें कर सकूँ।
इसलिए मैं जी रहा हूँ,
इसलिए हूँ जी रहा।
यदि किसी से पद के मद में
कुछ बुरा है हो गया।
तो बुराई वह हटा कर
फिर भलाई ला सकूँ,
इसलिए हूँ जी रहा, हाँ
इसलिए हूँ जी रहा।

अलि को सलाह

'क्यों उलझते हो कली से"
'इन्द्र' कहता है अलि से,
"पाँखियों का रंग जिसकी
है न निखरा, मन्द है।
मधु-रहस्य न जानता जिसका,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोप में ही बन्द है ।
"बूर जिस पर है न आया
जो न देती गन्ध है,
उस कली का हे भ्रमर क्यों
आज तुझ पर फन्द है ?
"हाल होगा क्या तुम्हारा,
जब खिलेगी यह कली ?
गन्ध और पराग देगी
मधुर मधु भी ऐ अलि !
"कुसुम सुन्दर बन हँसेगी
तब करोगे क्या भ्रमर ?
हाय बोलो क्या करोगे ?
क्यों गये हो आज मर ?"
"क्यों कली को छोड़ दूं ?" कह,
अलि नहीं है मानता ।
'इन्द्र' कहता फिर अलि से
"बात मेरी मान लो ।
"बूर जिस पर है न आया
गन्ध जिस में है नहीं
रंग जिसने है न पाया,
मधुर मधु भी है नहीं !
आज उस पर भ्रमर आकर
बाद में पछिताओगे,
आज यौवन को गँवा कर
के न वह फिर पाओगे ।
जब रहेगा ही नहीं, रे
जोश तुम में, ओ भ्रमर
तब खिलेगी यह कली रे,
क्या करोगे तब भ्रमर ?"

२३–संवेदना

प्रेम या संवेदना को
यदि उसे दे, जो कि तुझ से
है घृणा करता हमेशा,
समझ पाता है, न तो वह
राज़ तेरे हृदय का ।
डूबता आश्चर्य में है,
प्यार पाता है यदा ।
इस लिए तू दे ज़रूर,
प्रेम ही उसको सदा ।

२४· खेल है संसार-नाटक

धैर्य से तू देख इसको,
खेल-नाटक चल रहा ।
खतम होने से न पहिले
जाँचना अच्छा बुरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य तो हैं बदलते, जब
करवटें लेती कथा ।
ये नजारे रोज़ के लो
रोज़ जाते हैं बदल ।
अंक अन्तिम देख कर, पर
'इन्द्र' देना फैसला ।

२८–हारें, भूलें, ग़लतियाँ औ' विघ्न

ईश ने भेजा हमें कि
ग़लतियों को हम करें ।
फ़ेल होकर भी न हारें
कोशिशें करते रहें ।
छोड़ दें नहिं लक्ष्य को हम
फिर दुबारा शुरु करें ।

(२)

मुग्ध होकर लुब्ध होकर
भूल को यदि हम करें,
भूल के फल पाँय निश्चय,
और फिर अनुभव करें ।
स्वाद में वह भूल का फल,
ओह ! कितना था मधु !

(३) राह पर चलते हुए, यदि
मार्गच्युत हों भ्रष्ट पथ हों
या कि विचलित हों कभी,
या भटक कर राह पर हों,
टक्करें खाते हुए ।
गाढ़ जग के तिमिर में हा !,
ढूंढते हों रोशनी
प्रार्थनाएँ कर प्रभू की
माँगते होंवें प्रकाश ।
खोज कर पर पथ थके हों,
कठिन कर कर श्रम सभी ।
किरण धीमी आपड़े, लो,
चमक जाये रासता ।
तब सराहें श्रम किया जो,
दें प्रभू को धन्यवाद ।

(४)

'सत्य' जिसके मोल का नहिं,
मान मैंने था किया ।
आज उसके मोल ही की
जाँच होने है लगी ।
मोल उसका आँक लेंगे,
कष्ट गिन गिन जो सहे ।
लो पता अब है चला कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्य कितना 'सत्य' का।
"यदि न आते विघ्न पथ में,
ढूँढते जब सत्य थे,
तो भला हम क्यों समझते,
मूल्य कितना 'सत्य' का ?"

(५)

कोशिशों में जब लगे हों,
सोचते कुछ और हैं।
कोशिशें कर प्राप्त हों यदि
लक्ष्य, तो कुछ और हैं।
विघ्न आते कोशिशों में
तो समझते, वे हैं शूल।
लक्ष्य पाकर, हैं, समझते,
विघ्न बिन पाना फिजूल।

(६)

जीवनी संघर्ष में जब
हार आतीं थीं कभी,
तो, समझते थे सदा हम,
हार आनी हैं न ठीक।
आज जब हम जीत पाकर
देखते हैं भूत को,
तो समझते हैं कि कितनी
थी ज़रूरीं हार सब।
हार होती यदि नहीं तो
जीत भी होती नहीं।
हार ही ने तो दिया था,
आज का अनुभव हमें,
अनुभवें होती न 'गर तो
जीत होती किस तरह।
क्यों हमें तब प्राप्त होता,
आज का आनन्द यह।

(७)

मनुज कब समझा भला है,
ठोकरें खाये बिना ?
ये सँभलता ही तभी है
ठोकरें खाजाय जब।
"होश में आता है इन्साँ
ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना भी
खूब पिस जाने के बाद।'
सुप्त हो गई आतमा जो,
जागती संघर्ष से।
जाग कर औ' फूल कर तब
नहिं समाती हर्ष से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हार में' संघर्ष जग का,
'भूल में' चेतावनी,
'विघ्न में' है हर्ष जग का
ग़लतियाँ सुखभावनी ॥

२६-जी रहा हूँ किस लिए ?

(प्रेयसी के लिए—)

सदय होकर हृदय जिसका,
प्रेम करता है मुझे,
जी रहा हूँ मैं उसी का,
प्रेम पाने के लिए।

(मित्रों के लिए—)

सत्य-सुन्दर हृदय जिनके
जानते मेरा हृदय।
जी रहा हूँ मैं उन्हीं का,
हृदय पाने के लिए।

(स्वर्ग-प्राप्ति के लिए—)

स्वर्ग मुझ पर मुसकराता,
चाहना मेरी लिए।
जी रहा हूँ मैं उसी की,
चाहना ही के लिए।

(बन्धु बान्धवों के लिए—)

बान्धवों की बन्धनें जो
हैं बँधी मुझ से हुईं।
जी रहा हूँ मानवी उन
बन्धनों ही के लिए।

(भले कार्यों के लिए—)

हैं भले जो कार्य जग में
शक्त हूँ जिनके लिए।
वे सभी करके दिखाऊँ,
जी रहा हूँ इस लिए।

(ईश्वरेच्छा पूरने के लिए—)

सौंप कर के कार्य जो जो,
ईश ने भेजा मुझे।
और आशाएँ लगाईं
मैं उन्हें करता रहूँ।
जी रहा हूँ कार्य वे सब,
रोज़ करने के लिए।

(बुराइयाँ दूर करने के लिए—)

जगत में जो हैं बुराईं
दूर कुछ तो कर सकूँ।
जी रहा हूँ मैं बुराईं,
दूर करने के लिए।

(दूसरों के दुख उठाने वालों के लिए-)

दुःख उठाते जो सदा हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों ही के लिए।
धन्य हैं वे पूज्य जग के
जी रहा उनके लिए।
(मेरे लिए जिन्होंने दुख उठाए हैं,
उनकी कथा सुनने के लिए—)
दुख उठाते जो गये हैं
जगत् में मेरे लिए।
क्या कथा उनकी सुनूँ मैं,
जी रहा हूँ इस लिए।
(यशस्वी होने के लिए—)
हैं यशस्वी हो गए जो
पर दुखों को कर सहन।
चरण चिन्हों पर उन्हीं के
मैं चलूँ कर के यतन।
और उनसे भी अधिक फिर
मैं कमाऊँ यश यहाँ पर
जी रहा हूँ इस लिए।

सूख सुधा पीता रहूँ

एक ने देखा मुझे कि
भूख मुझ को है लगी।
रोटियाँ दीं जो कि खालीं,
भूख मेरी सब भगी।
एक ने देखा मुझे कि
सिसकता हूँ नग्न हूँ।
ढक दिया तन, दे दिया घर
सोच में मैं मग्न हूँ।
रोटियाँ तो मिल गईं पर
शब्द हैं नाँ प्रेम के।
घर मिला है, तन ढका है
शब्द पर नाँ क्षेम के।
भूख मिट गई साथ उसके,
याद रोटी मिट गई।
ढक गया तन साथ उसके
याद भी सब ढक गई।
प्रेम के पर शब्द प्यारे
दुःख में जो थे कहे,
याद में अब तक सभी वे
जागते जीते रहे।
शब्द वे तो हर समय पर
गूँजते हैं कान में।
हृदय हर जो ले गये हैं,
आन की उस आन में।
स्पर्श कोमल वह तुम्हारा!
हृदय से जो था किया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल जाऊँगा कभी क्या ?
प्रेम कर कर जो दिया ।
शब्द सुन सह-भूतियों का,
दुःख दारुण था सहा,
तरस खाकर जो तुम्हीं ने
हृदय पिघला कर कहा ।
भूल सकता हूँ न उसको,
जब तलक जीता रहूँ ।
हे प्रभो ! वचनामृतों की,
सुख-सुधा पीता रहूँ ॥

मित्रता

बाँधते हो क्यों भला तुम,
पुल बड़े तारीफ़ के ?
मित्रता में तो न होते,
लफ़्ज ये तारीफ़ के ?
मुस्कराने छोड़ दो वे
जो बनावट से भरे,
जो दिखावे ही दिखावे
चेहरों पर क्यों धरे ?
मित्रता स्वाभाविकी वो
हृदय से जो जागती;
ये कलाएँ, ये बनावट,
हैं कि जिन से भागती ।
मित्रता वह, जो निराली
बोल दिल के बोलती,
झूठ का नहिं लेश जिसमें
सत्य-मन के खोलती ।
प्रेम-की इक भूल है ये,
प्रेम-झूटे भूल लो
शर्त-पलड़ों में न तोलो,
प्रेम दिल से तोल लो ।
हृदय के गहरे तलों में
मित्रता का वास है ।
स्वामिता नहिं मित्रता में
मित्रता नाँ दास है ।
तग-दिल से दुश्मनी रख-
ती सदा, दिल खोल दो,
जो दिलों में है तुम्हारे
साफ़ उस को बोल दो ।
शुद्धता लाती दिलों में
डर डराने तोड़ती ।
पस्त में, हारे हुए मैं
हौंसले को मोड़ती ।
ग़लतियाँ करने लगो तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खबर देती है तुम्हें ।
मन्ज़िलें गर दूर हों तो
सबर देती है तुम्हें ।
दिल भरा ग़म से अगर तो,
खोल दो, हलका करो ।
आयना ये, देख जिसमें,
खुद लिया खुद को करो ।
दूर करती है थकानें
हृदय में उल्लास भर ।
आयु को देती उजाला
सौख्य का आभास कर ।
स्वार्थ का नहिं नाम जिसमें,
'उमर' ऐसी को निभा ।
मित्रता इक रोशनी है
दिवस कर देती, विभा ।
ये नहीं रुकती कभी भी
आमरण बढ़ती सदा
आपसी सम्बन्ध मैत्री
और दृढ़ होता तदा ।

धन्य जीवन ?

हा ! बुढ़ापे ने धकेली
जाय तो जाये कहाँ ?
हाय ! बुढ़िया ये अकेली
लेश-सुख पाये जहाँ ?
यदि न जाना कर सके तो
तप्त हो जलती रहे ?
आह भर भर आँसुओं की
धार को ढलती रहे ?
पलित इसके केश सारे
जेब में पैसा नहीं ।
अंग भी हैं रह गये, कम
ज़ोर इस जैसा नहीं ।
आज उनको याद है नहिं
जो कि इसके हैं सगे,
हाथ से इसके पले जो,
आज इसके क्या लगे ?
ये उसी के हाथ हैं पत-
ले हुए जो सूख कर ।
पालना की थी जिन्होंने
रात दिन को भूल कर ।
हाय ! हा ! मुर्झा गये, ये
झुर्रियों से हैं भरे ।
जाय तो जाये कहाँ पर,
काम उन से क्या करे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या मिला बदले में इसको
स्नेह से जो थी सनी ?
दूसरों की नौकरी में
माँ बनी, पत्नी बनी !
उमर भर की, सेवकी कर
हो गयी क्या यह धनी ?
नौकरी से कौन से हैं
पालिए इसने मनी ?
सोच ऐसे मत करो तुम
सोचने ये व्यर्थ हैं ।
प्रेम देने में खुशी है,
प्रेम पाने में नहीं ।
दान दे कर जीवनों का,
ईश से आशीष लो ।
तोष से परिपूर्ण उसका
हृदय निश्चय है, प्रिये ।
प्रेम पति को दे गई जो,
प्रेम वत्सों को दिये ।
काम आवे दूसरों के
धन्य है वो ज़िन्दगी ।
प्रेम दे जो दूसरों को,
धन्य है वो ज़िन्दगी ।

'चाह हो, ना नौकरी लूँ'
धन्य है वो ज़िन्दगी ।
'चाह होवे नौकरी दूँ'
धन्य है वो ज़िन्दगी ।
प्रेम-सेवा को न माँगे
धन्य है वह ज़िन्दगी
प्रेम-सेवा ही करे जो,
धन्य है वह ज़िन्दगी ॥

नव-वधू का स्वागत

घर यही है, प्रेयसी तुम-
को रिझाने के लिए ।
आँख तो कहती है खाली,
पर नहीं है, प्रेयसी ।
आतमा इस में है मेरी
जो न हो सकती जुदा ।
सत्य कहता हूँ प्रिये, मैं
जानता मेरा खुदा ।
मान इसका है बहुत, मुझ-
को सुनो, ऐ मानिनी ।
मोद का इस को बना ले-
ना किला, ऐ मानिनी ।
बात मुँह से वह न निकले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ दे जो प्रेम को ।
हम रहें इसमें उमर भर
दूर कर निष्प्रेम को ।
आज इन बाहों ने तुमको
है लपेटा प्रेयसी ।
द्वार को जब पार कर, तुम
आ गयी हो, प्रेयसी ।
हृदय तेरा प्रेम से खिल-
ता रहेगा जन्म भर,
एक छत से जो ढका है,
दुःख भय को त्याग कर ।
शरण पाता ही रहेगा,
दो दिलों को एक कर,
आँख शीतल ही रहेंगी
रोज़ तुमको देख कर ।

चेतानी-)

खड़खड़ाहट पौंढ़ियों पर
यदि कभी भी सुन पड़े ।
तो समझना और कुछ नहिं
स्वप्न मेरा ही सुनहरा,
बुड़बुड़ाहट कर रहा है,
जो रहेगी ही नहीं ।
नींद जब मेरी खुलेगी,
ये मिलेगी ही नहीं ।
चमकना मत प्रेयसी तुम
औ बिदकना भी नहीं ।
आज सुन्दर क्षेम का, चँदु
आ तना है प्रेयसी,
आज सुन्दर प्रेम का, ये
घर बना है, प्रेयसी ।

३१ नव वर्ष का दिवस

दिवस यह नव वर्ष का रे,
आ गया रे आ गया ।
कीमती है बहुत इसका,
छिन अरे, हर एक रे ।
क्या पता हमको अभी से,
क्या न कर दिखलाय रे ?
कौन जाने, कब करे ये
एक नई ईजाद, रे ?
कब भरे धन के खजाने
दारिद्री बरबाद कर ।
कौन जाने, कब भरे ये
सौख्य धन से कोष को ?
बाँट लेवें मित्र जन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौख्य के भण्डार को ।
जो मिले उससे कहें हम,
"प्राप्त कर सुखराज को ।"
प्रात जो प्रत्येक आवे,
तो यही हो कामना ।
"प्राप्त कर सुखराज को तू
प्राप्त कर सुख राज को" ।
ये हमारी हो नमस्ते,
ये हमारी हो सलाम ।
कल भुलादे एक दम तू,
याद कर बस आज को ।
कल जु गुज़री, गई कभी की,
कल जु आयेगी, अभी ।
याद कर मत इन कलों को
याद कर तू आज को ।
इस तरह से ज़िन्दगी के
वृक्ष के जो टहन हैं,
तोड़ दे जितने हैं सूखे,
और उनको दे जला ।
याकि उनमें भर रसों को
जो करें फिर से हरा ।
इस तरह से ज़िन्दगी के
जो भी रेगिस्तान हैं,
छोड़ दे, वे सब जो सूखे
कहत से हैं मुवतिला ।
याकि करके आबपाशी
ले उन्हें तू कर हरा ।
(किसी को बुरा न कहना-)
होठ हम सब कस के भीचें
ताकि निकलें हीं नहीं ।
कोई भी बदगोई जो हैं,
याकि मुहँ से निन्दना ।
जो कि दुख का मूल बनकर
दुख बढ़ावें जगत में ।
कष्ट उससे भी अधिक दें,
कल्पना जिसकी नहों ।
(हमारी कामना-)
आव प्यारे, आव प्यारे
नव बरस का दिवस है ।
आज ये हम प्रण करें हाँ,
साथ मिल करके सभी ।
दिवस हो प्रत्येक इसका
जो बढ़ावे प्रेम को ।
प्रेम के वश में सदा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर बढ़ावें क्षेम को।
आर्द्र होकर के दया से
आर्त दुखियों की सदा,
चिन्तना में मन लगावें,
और करते हों यतन ।
प्राण यदि देने पड़ें तो
दीन के हित प्राण दें ।
जगत ये सुन्दर बनावें
हिंस्त्रकों को बाण दें ।
देश के कल्याण में ही,
जाति के हित जान दें।
मान का अभिमान कर के
सकल जीवन दान दें ।

३२ मेरा घर

भित्तियाँ हों चार चाहे,
और उन पर छत पड़ी।
सजधजी दीवार होवें,
फोटुएँ होंवें गड़ी ।
पर नहीं बनता कभी 'घर'
इस तरह से हे 'कवि',
प्रेम की यदि हो न उस में
झलकती मुदित छवि।

छातियों को छातियों से
गर न कोई ले मिला ।
चूमने को होंठ हों नाँ,
प्रेम जो देंवें पिला ।
यदि न स्वागत हो तुम्हारा,
यदि न खुशियाँ हों जहाँ,
यदि न आमद से तुम्हारी,
दिल भरे उन का वहाँ ।
(घर कैसे हों ?)
घर वही होगें सुहाने,
प्रेम जोती यदि जगें।
हार मेरे हों कि जिनमें,
प्रेम मोती जगमगें ।

३३ वन महोत्सव का गान

(कोरस में, नृत्य के साथ
दायरा बनाकर गाते हुए ।)
पादपों की देन हमको
हैं अनेकों भामिनी ।
देन से भी है अधिक पर,
शान उनकी मानिनी ॥
ज़िन्दगी का है अचम्भा
एक दाना बोइये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरगदों को जन्म देकर,
फिर समाता राई में ।
स्तम्भ ऊँचे शक्तिशाली,
बीज कण अदृष्ट में ।
गगन चुम्बी गुम्बदों को
ओढ़ लेते सृष्टि में ।
वृष्टियाँ हैं बरसती जब
हिम नगों के शिखर पर ।
जाल, तरुओं की शिफाओं
के, जलों का रोध कर ।
मन्द कर तेज़ी चुओं की
भूमिधर लेते बचा
प्लाव-जल के; भय भयानक
दूर करते हैं तदा ।
इस तरह वन, मूल तरु के
नद - नदी के जन्मदा
नद-नदी जो जाति जन औ'
देश की हैं सम्पदा ।
दमक है 'गर दामिनी में
गन्ध तो है ही नहीं
विमल कोमल 'कामिनी' में
(कामिनी एक गुल्मलता है ।)
क्या नहीं है, कामिनी ?
आम औ' अंगूर प्यारे
नाम सुनते ही हमारे,
भर गए मुख पानियों से
क्या, कहो नहिं भामिनी ?
कमल के से फूल सजनी
भूल सकता कौन है ?
गुल गुलाबी जो दमिश्की
इश्क की भी रश्क हैं ?
कूँज इनके, गूँज जिन में
भौंर की हैं भाभिनी,
माधवी दिन को सजाती
रातरानी यामिनी ।
मक्खियाँ-मधु गुनगुनातीं
मोरनीं हैं कूकतीं ।
बुलबुलें हैं चुलबुलातीं,
कोकिलें हैं हूकतीं ।
गान मिलनी तान उठतीं
हर तनों, हर शाख पर ।
शकरखोरा नील मणि-सा
ताक में है दाख पर ।
घाम की इन तापिशों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीत करते छाँह से ।
वारते हैं बारिशों को,
छत्र धर कर बाँह से ।
सन्तरी हैं आश्रमों के,
पथिक जन विश्राम हैं ।
लोभ कर फल का चढ़ें जो,
बटुक का व्यायाम हैं ।
वृक्ष-भञ्जन जो प्रभञ्जन
ये उसे हैं मोड़ते ।
शिशिर या हेमन्त की भी
ढाडुओं को रोकते ।
गरम लू को झेल कर के
सुखद ये संसार को ।
फूल इनके जो अनेकों,
सृष्टि के सिंगार वो ।
श्वेत, पीले, लाल, नीले,
औ रँगीले रंग विरंग ।
पाँच—रंगी चार—रंगी
और कितने है तिरंग ।
चाँद सूरज तारकों-से
रूप दिखला सोहते ।
मनुज केवल को नहिं, कुल
जगत को हैं मोहते ।
खाद्य इनसे प्राप्त होते,
मृत्यु हैं इनके बिना ।
तन ढके, हमने इन्हीं से
नग्न हैं, इनके बिना ।
ताप की जो शक्ति हम को,
प्राप्त होती सूर्य से,
ये हि हैं भण्डार, लकड़ी
कोयले के रूप में ।
आग जलती जो हमारी
पाकशाला में, प्रिये
सर्दियों में सुखद होती,
गर्मियाँ देती हमें ।
ये न होते, वो न होतीं
ठिठुर मरते रात दिन ।
यज्ञ की हम अग्निमीले,
यज्ञशाला में जाल ।
वृष्टियाँ हैं वर्षती तब,
धान्य धन देती बढ़ा ।
मृतजनों की जो समाधें,
या कहीं पर कबर हैं,
पास वाँ हैं वृक्ष उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र की सी नज़र हैं ।
ज्ञान की हैं, वृद्धि करते,
कागज़ों को दे हमें ।
आँख रख भी मूर्ख होते
यदि न होते वृक्ष ये ।
देश में अब तक न ऐसा
कोई भी त्यौहार था ।
देश की खुश किस्मती से,
है बना त्यौहार ये ।
हर बरस कर वन-महोत्सव,
वृक्ष आरोपण करें ।
देश की कुल वृक्ष सम्पद्
को बढ़ाते ही रहें ॥

फूलो फूलो, फूलो रे

यदि कोई आवे चिन्तित जन,
आहत हो संसारी से,
डूब रहा हो भारी से ।
खुश कर लेगा अपने मन को,
टहन टहन पर झूलो रे ।
फूलो फूलो, फूलो रे ।
हँसते खिलते रस बरसाते ।
जो जो तुमको देखेगा ।
गलत ग़मों में वह कर लेगा ।
प्रभु के गुण को गाते गाते
प्रभु को मत कवि, भूलो रे ।
फूलो फूलो, फूलो रे ।
सेवा जग की करते जाओ
दुखिया जो मन वर्षों से,
भरना वह मन हर्षों से ।
खुशियाँ जग में झरते जाओ ।
अमित-अनँद की मूलो रे ।
फूलो फूलो, फूलो रे ।
मरकत सी हरियावल वाले
खेतों में तुम नाचो खूब
बीच खिले हरियाली दूब ।
फर्श बिछे जो मखमल वाले
नाचों में तुम भूलो रे ।
फूलो फूलो, फूलो रे ।
जब ऋतुएँ रति की आयें, रे
कोकिल कूक सुनायें, रे
दिल में हूक उठायें रे ।
भौरों को भी लायें रे
चुभना मदनी शूलो, रे
फूल हृदय के फूलो रे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलो फूलो, फूलो रे ।

विद्या माता के प्रति–

विद्या मन्दिर आरतियों से
तन्त्रित होवें हृद् के तार ।
सुर में सुर हों, लय में लय हों,
गुरुजन की होंवें झंकार ।
माता तेरा बाग सजा हो
गुरुजन फूलों की हो क्यार ।
भीनी भीनी महक बहावें
भौरें हम विद्या-मधु प्यार ।।
सन्तति से माता है बनती
सन्तति माता का आधार ।
भारत माँ की सन्तति हैं हम
भारत माँ से सबका प्यार,
भारत माँ का सबसे प्यार ।।

गुरुकुल में मेरा प्रवेश

छे बरस का बाल था मैं,
एक छोटा सा जिसे,
छातियों के साथ चिपटा,
माँ सुलाती प्यार से ।
वृद्ध मेरे थे पिताजी,
आयु उनकी साठ थी ।
सोचते थे क्या पढाऊँ,
योग्य पढ़ने हो गया ।
" बाल को मैं क्या बनाऊँ,
सोचते थे रात दिन ।
ब्राह्मणों का वंश मेरा,
तीन मेरे पुत्र हैं ।
पश्चिमी तालीम लेने
दो चले कालिज गए ।
एक ही बाकी बचा है,
क्यों न यह संस्कृत पढ़े ?"
सामने थी मेज़ उनके,
औ' सुबह का वक्त था ।
फैसला करना कठिन था
प्रश्न वाक़ै सख्त था ।
"फिर उसे हम सोच लेंगे,
यह उन्होंने कह दिया ।
आ गया अखबार जो था,
हाथ में वह ले लिया ।
देखते हैं पलट वरका
खबर क्या है आज की ?
कौन मेला है लगा अब,
कौन खेला आज है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन चढ़ता है सिंहासन
कौन लेता राज है ?
इश्तिहारों को पढ़ा तो
साफ उनमें था लिखा ।
होलियों की छुट्टियों में
पुण्य हरि के द्वार में ।
आर्यजन का एक मेला
शीघ्र है लगने लगा ।
वेद के विद्वान देने
वेद के सन्देश को,
आँयगे फिर से जगाने
सो गए इस देश को ।
वैदिकी शिक्षा—प्रणाली
आज फिर से है चली ।
विश्व ने ऐसा सुना तो
पड़ गई है खल बली ।
स्वामियों सन्यासियों के
दर्शनों को पाँयगें ।
विश्व भर के आर्य जन सब
आ मिलेंगे प्रेम से ।
तीर्थ गंगा स्थान पर तब
वेद गंगा स्नान कर,
श्रवण कर वेदा मृतों को,
लौट घर को जाँयगे ।
आर्य वीरो, धर्म धीरो,
एक बस आह्वान है ।
आन वालो, मान वालो,
वेद का व्याख्यान है ।
"हम बना दें आर्य जग को"
गीत मिल सब गाँयगें ।
धर्म धुज को फिर उठाकर,
जगत में फहराँयगे ।
स्वर्ण से होंगे ध्वजा पर
ओम् के अक्षर लिखे
रेशमी होगी पताका
वाल रवि सी रंग में ।
और उसका दण्ड होगा
स्वर्ग को छूता हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ झ का शेष—)

तीसरी लहर बड़ी मार्मिक है। पंजाब में एक शहर फिल्लौर है। वहाँ के किले की दीवार रोज रात को गिर जाती थी। शाही हुक्म हुआ कि एक ब्राह्मण के इकलौते बेटे को किले की दीवार में चुनवा दिया जाय। पर एक मुसलमान फ़कीर ने अपनी जान कुर्बान कर के किस तरह ब्राह्मण हिन्दू लड़के को बचाया इस लहर में पढ़ें। जो कुछ बीता उसका जीता जागता चित्र है।

चौथी लहर में एक क्षत्रिय योद्धा वीरबल की अपार सुन्दर लड़की के बलिदान का वर्णन हैं। उस लड़की को एक ज़ालिम हाकिम अपनी विषय वासना का शिकार बनाना चाहता था। उसने किस तरह छल कपट द्वारा उस लड़की को अपनी विषय वासना की पूर्ति के लिए प्राप्त करने का प्रपञ्च रचा। और उसके छल का क्या दुष्परिणाम हुआ। उस मासूम निष्पाप, भोली लड़की को अपने प्यारे पिता के हाथों ही मरना पड़ा : इस का दिल दहलाने वाला वर्णन जिसे पढ़ कर कि पाठक अश्रु धाराओं को बहा बहाकर रोने लगता है, इस चौथी लहर में पढ़ें।

पाठकों को यह भी जानकर हर्ष होगा कि कवीन्द्र जेतल जी की दो धारायें भी छप कर तैय्यार हो गई हैं। ये दोनों एक ही पुस्तिका में एकत्र रखी गई हैं। इन धाराओं का नाम करुण धारा और रञ्जन धारा है। करुण धारा में गद्दी भाग मल की करुण कहानी है। गद्दी भाग काँगड़े की पहाड़ियों में धौली धार की उपत्यका में रहता था। भेड़ बकरियाँ चराकर अपना जीवन निर्वाह करता था। उसके खेत गिरवी हो चुके थे। पर उसने रात दिन अन-थक मेहनत से उन्हें छुड़ा लिया। बड़ी उमर में परमात्मा ने उसे पुत्ररत्न दिया। गद्दी भाग मल और उसकी धर्मपत्नी इससे अपने इकलौते पुत्र कमल नयन को बुढापे में पाकर फूले न समाते थे। कमल उनके बुढ़ापे की टेक था। अपने बाप को हर तरह की मदद देता था भागमल अपने एक भतीजे का किसी वक्त जामनी बना था। दुर्भाग्य से उसे जामनी होने के नाते वह सब रकम देनी लाज़मी हो गई कि जिसके लिए उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने आपको जामिन ठहराया था । इससे उसकी आधी जायदाद बिकजाने का खतरा हो गया। भागमल ने स्कीम बनाई कि वह अपने पुत्र को जालन्धर भेज देगा। वहां उसका पुत्र उसके मित्र के पास रहकर काम सीखेगा और कमाई करके लायेगा। पर अभागे भागमल का दुर्भाग्य बली था। वह लड़का जालन्धर जाकर कुकर्मों में फंस गया और शर्म तथा लज्जा के मारे अपने पूर्वजों के गाँव में न आया बल्कि भारत से बाहर किसी विदेश में चला गया। भागमल का बुढापे का सहारा टूट गया। भागमल और दूसरों ने अपना बुढापा दुख में बिताया इस लहर में अनेको रस प्रवाहित हुए हैं। वात्सल्य रस का स्त्रोत अविच्छिन्न बह रहा है। स्वाभाविक प्रकृति के अवर्णनीय वर्णन प्रस्तुत किये गये हैं। भागमल और दूसरों के भावों की व्यञ्जना और उनके अद्भुत चरित्रों का चित्रण अनुपम है जिस की प्रतिमा भी घड़ना किसी कवि के लिए कठिन ही नहीं अपितु असंभव सा है।

इसी पुस्तिका में दूसरी धारा रञ्जन धारा है। इसमें गोपाल मल का मशहूर किस्सा दिया गया है। गोपाल मल जी की श्रीमती ने अपने पति से कहा कि पति जी हमें २० बरस हो गये है पर हमने मिलकर कोई खुशी का दिन नहीं मनाया। कल हमारा परिणय दिवस है। क्या ही अच्छा हो कि हम दिल्ली के आम में जाकर वहाँ मिलकर सह भोज कर के मनाएं। तू कि सब रथ में इकठ्ठे बैठ कर नहीं जा सकते हैं इसलिये मैं बच्चों के साथ रथ पर बैठ कर जाऊँगी, आप घोड़े के अच्छे सवार हैं घोड़े पर बैठ कर आ जाना। घोड़ा किस तरह गोपाल मल को किस तरह उड़ा कर ले जाता है। गोपाल के घोड़े की रेस भारत के सबसे बड़े एस् से होती है ये सब मनोहारी व दिल लुभाने वाली कहानी रञ्जन धारा में पढें।

श्री धनवंत वैद्य संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri